जंगल के पहले

हीरा, ९ वर्ष, भोपाल, म.प्र.

क्या-क्या है इस अंक में

[illegible]

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात....

इस बार तुमसे एक बहुत ही खास बात बाँटनी है। इन दिनों हमारे आसपास एक ऐसी घटना हो रही है, जिसे अगर तुम देख सको तो क्या कहने! जीवन में ऐसा मौका फिर नहीं मिलने वाला! मौका है मंगल ग्रह को करीब से देखने का।

बात यह है कि अगस्त और सितम्बर 2003 के महीनों में पृथ्वी और मंगल अपनी-अपनी कक्षाओं में घूमते हुए बहुत पास आ जाएँगे। इतने पास कि कुछ खगोलशास्त्रियों का कहना है कि ऐसा पिछले पाँच हज़ार साल में पहले कभी नहीं हुआ है। और अगली बार इतने पास ये शायद सन् 2287 में आएँ। यानी 200–250 सौ साल बाद!

यूँ तो आजकल मंगल पूर्व दिशा में रात के लगभग नौ-दस बजे उगता है। और रात के लगभग तीन बजे हमारे सिर के ठीक ऊपर रहता है। पृथ्वी के सबसे करीब यह इसी 27 अगस्त को आएगा। उन दिनों यह शाम ढलने के बाद उगा करेगा और रात 12 से 12.30 बजे सिर के ऊपर रहेगा। तब यह खाली आँखों से भी चाँद जितना बड़ा दिखाई देगा।

खाली आँखों से हमारे सौर मण्डल के इस लाल ग्रह को देखने का इससे बेहतर मौका और क्या हो सकता है। हम तो पिछले तीन-चार दिन से लगातार कोशिश कर रहे हैं यह नज़ारा देखने के लिए! पर बादल आड़े आ जाते हैं। फिर भी कोशिश जारी है। तुम भी देखना और बताना क्या देखा, कैसे देखा और कैसा लगा।

● चकमक

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-19 अंक-2 अगस्त 2003

सम्पादन

विनोद रायना

कविता सुरेश

टुलटुल विश्वास

सुशील शुक्ल

विज्ञान परामर्श

सुशील जोशी

वितरण

कमल सिंह

मनोज निगम

सहयोग

राकेश खत्री

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य

ई-7/एच आई जी – 453

अरेरा कॉलोनी,

भोपाल - 462 016 (म. प्र.)

फोन : 2463380

ई-मेल : eklavyamp@vsnl.com

कवर का कागज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति :	10.00 रुपए
छमाही :	50.00 रुपए
वार्षिक :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 30.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

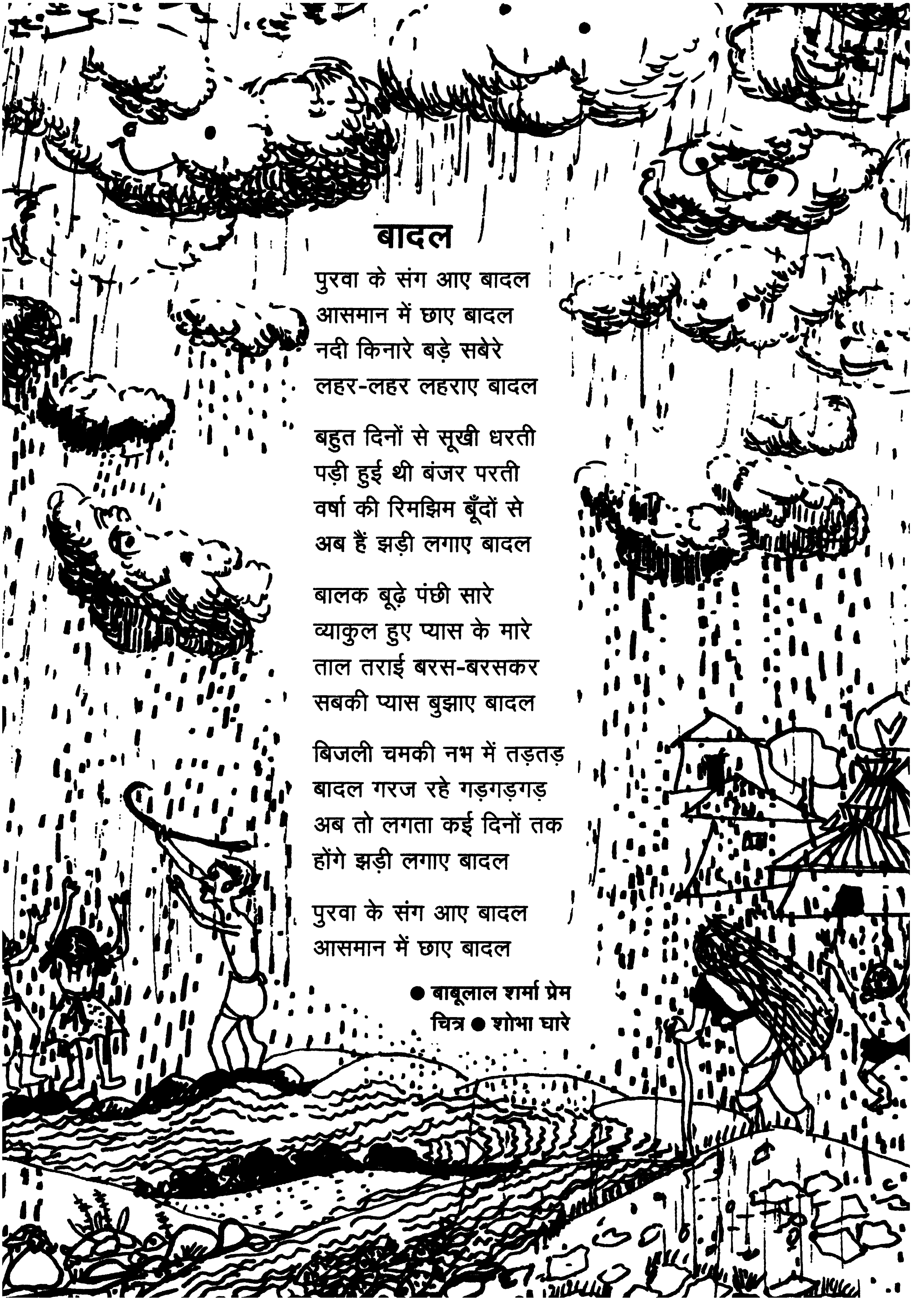

बादल

पुरवा के संग आए बादल
आसमान में छाए बादल
नदी किनारे बड़े सबेरे
लहर-लहर लहराए बादल

बहुत दिनों से सूखी धरती
पड़ी हुई थी बंजर परती
वर्षा की रिमझिम बूँदों से
अब हैं झड़ी लगाए बादल

बालक बूढ़े पंछी सारे
व्याकुल हुए प्यास के मारे
ताल तराई बरस-बरसकर
सबकी प्यास बुझाए बादल

बिजली चमकी नभ में तड़तड़
बादल गरज रहे गड़गड़गड़
अब तो लगता कई दिनों तक
होंगे झड़ी लगाए बादल

पुरवा के संग आए बादल
आसमान में छाए बादल

● बाबूलाल शर्मा प्रेम
चित्र ● शोभा घारे

मेरा पन्ना

हिरण का छौना

आज सुबह की सैर में जब
मैं अपने पापा के साथ गया,
बरसात होते ही वन हरियाली
से छा गया।

एक चट्टान पर हम दोनों
बैठे ही थे कि पीछे से किसी
के दौड़ने की तेज आवाज
आई। पीछे मुड़कर देखा तो
एक हिरण का छौना बड़ी
तेजी से दौड़ता हुआ आ रहा
था। और पीछे पीछे एक
कुत्ता उसका पीछा कर रहा
था। पर चैन तब आई जब
हिरण का छौना हरी हरी
झाड़ियों में छुप गया। और
कुत्ता पूँछ हिलाता हुआ पीछे
खड़ा रहा।

मुझे चिन्ता हुई कि पापाजी
अब क्या होगा? पापाजी
बोले, "कुछ नहीं। अब कुत्ता
भाग जाएगा। और छौना
अपने परिवार से मिल जाएगा। तुम चिन्ता मत करो।"

और हम दोनों घूमकर आ गए। घूमने में बड़ा मजा आया
क्योंकि जंगल का दृश्य मुझे बहुत ही भाया।

● साकेत गुप्ता, पाँचवीं, शाहगढ़, सागर, म. प्र.

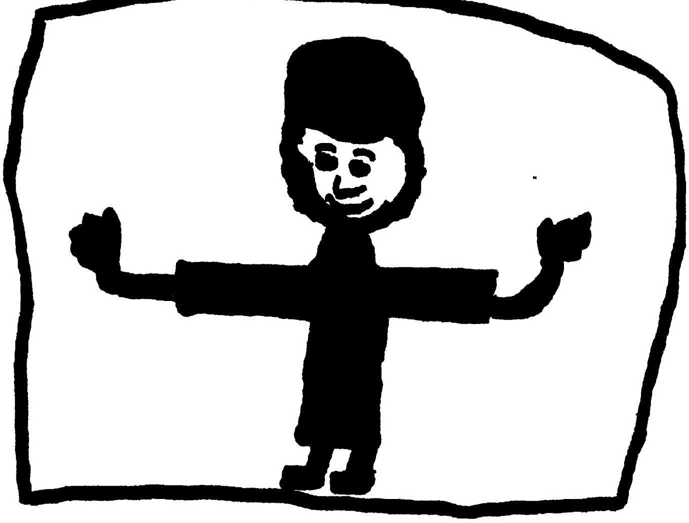

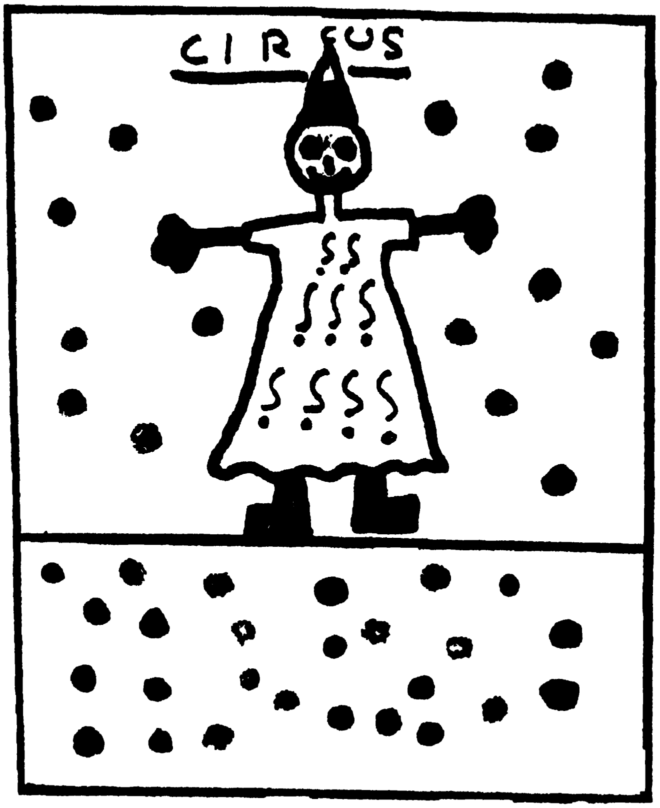

● अनु विधार्थी, दस वर्ष, बीसलपुर, पीलीभीत, उ. प्र.

लोमड़ी

एक जंगल में लोमड़ी रहती थी। वह पानी की तलाश में इधर-उधर भटक रही थी। जंगल में एक कुआँ था। उस कुएँ में पानी कम था। कुएँ में दो बाल्टी लटकी थीं। लोमड़ी एक बाल्टी में बैठ गई। बाल्टी नीचे चली गई। अब लोमड़ी ऊपर नहीं आ पा रही थी। तभी एक बकरी जो पानी की तलाश में भटक रही थी, उसने कुएँ में देखा। लोमड़ी बाल्टी में बैठी थी।

बकरी कहती है कि – मैं इस कुएँ का पानी पी सकती हूँ। लोमड़ी कहती है – पी सकती हो। जैसे ही बकरी बाल्टी में बैठती है लोमड़ी ऊपर आ जाती है। और बकरी बाहर नहीं आ पाती है। वह कुएँ में ही मर जाती है।

● मो. सलमान , वाणगंगा , भोपाल, म. प्र.

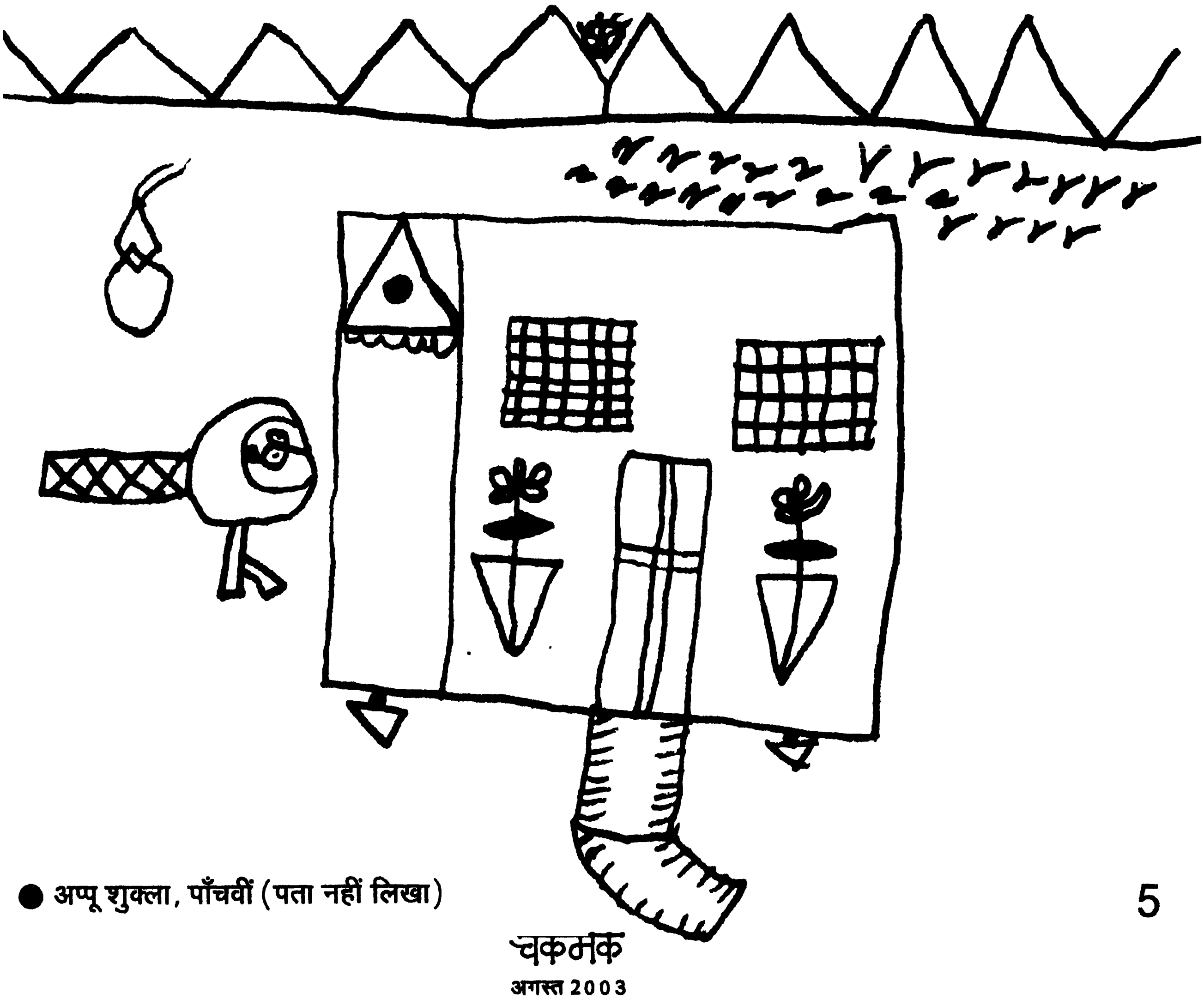

● अप्पू शुक्ला, पाँचवीं (पता नहीं लिखा)

मेरा पन्ना

ऐसा भी होता है...

मैं बस स्टॉप पर खड़ा था। वहाँ पर एक फलों से भरा ठेला खड़ा था। उसी के पास उस ठेले का मालिक खड़ा था। कुछ देर बाद एक बूढ़ी महिला वहाँ आई। उसने ठेले मालिक से ठेले के एक कोने में पड़ा एक सड़ा-सा फल माँगा। मगर उस आदमी ने उसे वहाँ से भगा दिया। वह महिला बेचारी वहाँ से चली गई।

कुछ देर बाद एक हवलदार वहाँ आया। बहुत सारे फल तुलवाए और पैक करवाने के बाद उस आदमी से बोला, 'ए, पैसा दूँ!'

वह आदमी बोला, ''अरे कोई बात नहीं। रहने दीजिए!''

● विजय बड़गुजर,
देवास, म. प्र.

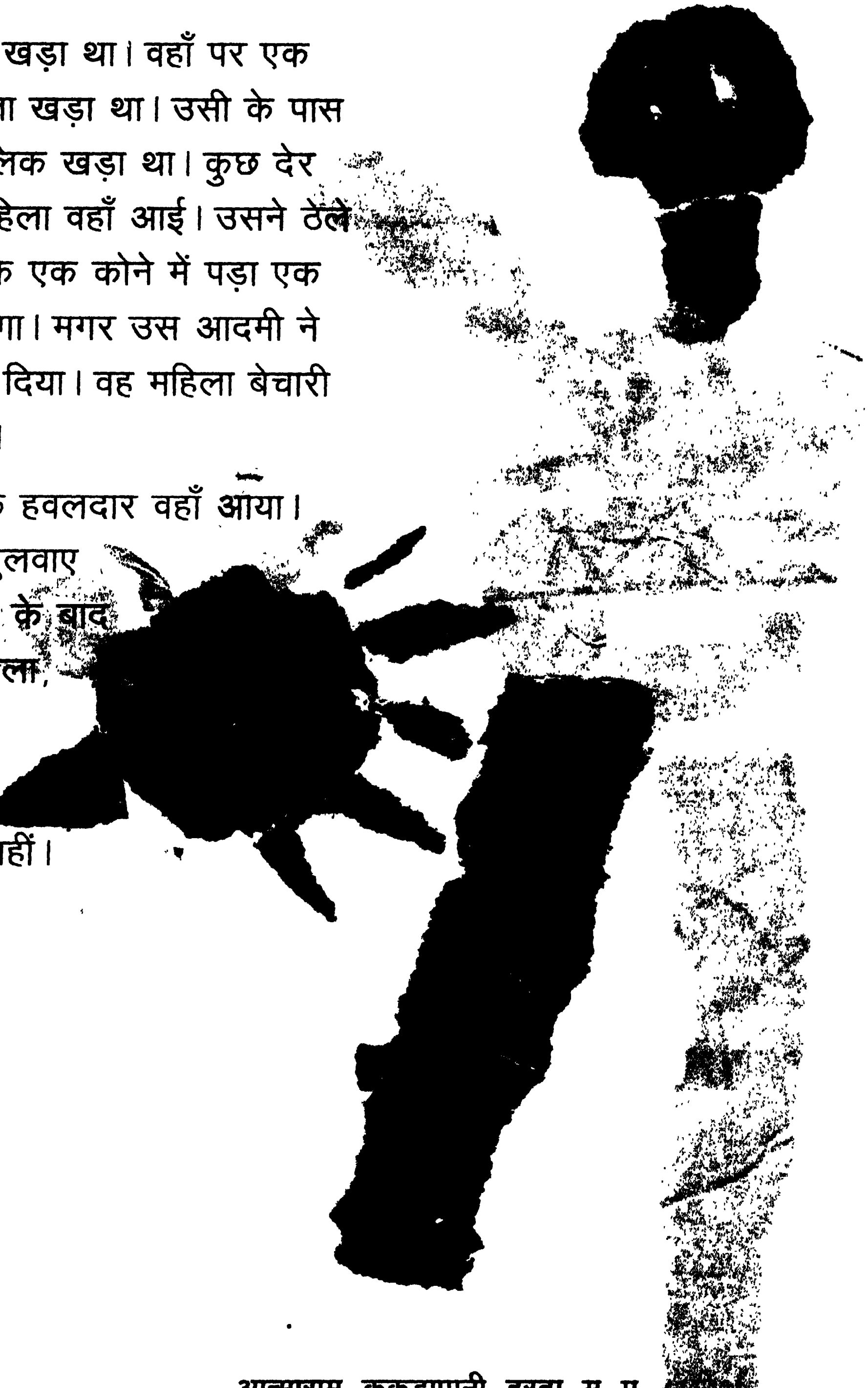

आत्माराम, कूकड़ापानी, हरदा, म. प्र.

प्रदूषण

गर्मियों की बात है। अप्रैल-मई का महीना था। एकलव्य संस्था हर साल विज्ञान एवं कला शिविर लगाती है। कई बच्चे इस शिविर में जाते हैं। मैं भी इस साल इस शिविर में गया।

एक दिन हमें पक्षी दर्शन के लिए ले जाया गया। हम बहुत उत्साह से जा रहे थे। मेरे हाथ में कैमरा था। मैंने एक ऐसी जगह देखी जहाँ पूरे शहर का कचरा था। मैंने देखा एक वृद्ध आदमी उस कचरे में से कुछ निकाल रहा था। मैंने उनका फोटो खींचा और पूछा कि आप ये क्या कर रहे हो? मुझे जवाब मिला, "इस कचरे से पोलीथीन अलग कर रहा हूँ।" मैंने पूछा, "आप इसका क्या करोगे?" तो उन्होंने बोला, "बेचूँगा।" मैंने आश्चर्य से पूछा, "बेचोगे? किसे?" मुझे उत्तर मिला, "कबाड़े वाले को।"

मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था। मैंने फिर पूछा, "कबाड़े वाला इन सड़ी-गली पोलीथीन का क्या करेगा। इन्हें किसी को बेचेगा या कहीं और फेंक देगा?" उन्होंने कहा, "वो फैक्ट्री में देगा। तुम्हारे पास जो पोलीथीनें आती हैं वे इसी कूड़े से आती हैं।" मैंने नाक सिकोड़ते हुए कहा, "ये जो हमारे यहाँ पापड़, चॉकलेट, सब्ज़ी, कपड़े, खाद्य वस्तु आती हैं, वे इन्हीं पोलीथीनों में आती हैं।" तो उन्होंने कह दिया, "हाँ!" अब हम क्या कर सकते हैं? अब तो खाना, चॉकलेट ये सब कुछ दूषित है।

हमारे शहर उज्जैन में बस एक साल बाद सिंहस्थ आने वाला है। पर क्षिप्रा अभी भी प्रदूषित है। हमारी इस पवित्र नदी पर कई प्रयोग किए जा रहे हैं। मगर सरकार उस पर कोई ध्यान नहीं दे रही है। महाकाल जाने के रोड पर कचरा फेंका जा रहा है। परन्तु इस पर कोई ध्यान नहीं दे रहा है। सारे उज्जैन शहर में बस एक ही बात हो रही है क्षिप्रा का पानी प्रदूषित है, उस पर कोई ध्यान नहीं दे रहा है।

अब कर भी क्या सकते हैं। अगर ये कचरा साफ भी हो जाए तो लोग तो और भी कचरा फेंकेंगे। परन्तु लोग कहते हैं 'कचरा हम फेंकने कहाँ जाएँ?' तो नगर निगम ने हर क्षेत्र में कूड़ादान लगवा दिए। और उन्हें ऐसा लगा कि हो गया हमारा काम! और सूचना भी दे दी गई कि फलाँ नेता ने यह कूड़ादान लगवाया है। करीबन दो महीने बाद वह कूड़ादान भर गया। लोग तब भी उसमें कचरा फेंक रहे हैं। यह बात करीब दो साल बाद की है। परन्तु आज भी कूड़ादान साफ करने कोई भी नहीं आया। आज की तारीख में यदि कोई कूड़ादान देखने जाए तो वह भी नहीं दिखेगा। दिखेगा तो सिर्फ कूड़ा।

● रजत शर्मा, आठवीं, उज्जैन, म. प्र.

● माथा, पाँचवीं, कूकड़ापानी, हरदा, म. प्र.

बादल गरजे.......

बादल गरजे गर गर....
बिजली कड़के कड़ कड़....
पानी बरसे झर झर.....
चकमक चले छप छप....

चित्र एवं कविता ● ऐश्वर्य कुमार वर्मा, दूसरी, भिलाई, छत्तीसगढ़

पेड़

यह है एक सुन्दर पेड़
बड़ा और सुन्दर यह पेड़
इसकी पत्ती से
हमको छाया मिलती है

यह एक सुन्दर पेड़
इसमें पक्षी घोंसला बनाते
और इसमें शाम सबेरे पक्षी चहचहाते
आता जाता आदमी जब थकता
इसके नीचे सो जाता

● उमा, पाँचवीं, सताहन, सिरमौर, हि. प्र.

● अमरसिंह, तीसरी, रेवा जीवन शाला, चिमलखेड़ी, महाराष्ट्र

● राहुल बाविसटाले, तेरह वर्ष, तोरबा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

एक बार जब मैं घूमने गई!

एक बार मैं अपने पापा और छोटे भाई-बहिन के साथ घूमने गई। हम सब वैन में यमुना नदी के किनारे गए थे। हम सब नदी में खड़े हो गए! हम किनारे से कुछ ही दूरी पर खड़े थे। हम सब एक-दूसरे पर पानी डाल रहे थे।

पानी हल्का ठण्डा था। मुझे ठण्ड लगी तो मैंने पापा से कहा कि मैं किनारे पर जा रही हूँ। अभी मैं चार-पाँच कदम ही चली थी कि मेरा पैर फिसला और मैं पानी में एक गड्ढे में जा गिरी। मैं पानी में हाथ-पाँव मारने लगी। पानी में होने के कारण मैं चिल्ला भी नहीं सकी। किनारे में खड़ी एक लड़की ने मुझे देख लिया और उसने चिल्लाकर मेरे पापा से कहा 'अंकल आपकी बेटी तो अच्छा तैर लेती है।'

मेरे पापा ने सोचा, 'अरे उसे तो तैरना ही नहीं आता है।' वो भागकर आए और पानी से मुझे निकाला। बाहर आकर मेरी जान में जान आई। मेरे पापा मुझे देखकर हँसने लगे क्योंकि मेरे पूरे शरीर पर घास चिपकी थी। मेरे भाई-बहिन मुझे जंगल गर्ल कहने लगे। और फिर हम घर चले गए।

● चारु चावला, एस.एस.सी.गर्ल्स सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, नई दिल्ली

एक से मुलाकात

कमल किशोर कुम्भकार

वरुण पिछले दिनों की लम्बी बीमारी के बाद सुबह जल्दी उठकर पढ़ने बैठा। गर्मी के शुरुआती दिन थे। सुबह की हल्की-हल्की गुलाबी ठण्ड माहौल को खुशगवार बना रही थी। वैसे तो डॉक्टर ने उसे आराम करने को कहा था। पर फिर भी वरुण उस दिन सबेरे खिड़की खोलकर बिस्तर पर ही अधलेटा-सा पढ़ने लगा।

बाहर की हल्की हवा के साथ पीपल के पत्तों की अठखेलियाँ उसे सकून दे रह थीं। स्कूल की छुट्टियों और ढेर सारे होमवर्क की चिंता में वरुण कभी किताब के पन्ने खोलता तो कभी बाहर झाँककर इक्के-दुक्के सैर करने वालों को देखता। पर न जाने क्यों उसकी नज़र बार-बार हवा और पीपल के पत्तों की झूमा-झटकी पर अटक जाती। इस पूरी दुविधा को वह सही ढंग से समझ ही नहीं पाया था, कि एकदम, एक ताज़ी-ताज़ी पत्ती उसकी गोद में रखी किताब पर आ गिरी। वरुण उस पत्ती को उठाकर बाहर फेंकने ही वाला था कि पता नहीं क्यों उसने पत्ती को अपने सामने रखा और उसे गौर से देखने लगा। अचानक उसके कानों में एक आवाज़ गूँजी।

"धन्यवाद वरुण!"

उसने इधर-उधर देखा तो कोई भी नहीं दिखा। वह फिर पत्ती को देखने लगा। फिर आवाज़ आई।

"मैं तुमसे ही बात कर रही हूँ।"

अबकी बार आवाज़ सुनकर वरुण को लगा कि कहीं पत्ती तो नहीं बोल रही है? उसने नज़रें गड़ाकर पत्ती को देखना शुरू किया। अब वरुण को विश्वास हो चला था कि पहले की दोनों आवाज़ें पत्ती की ही थीं। फिर भी उसने अपने अंदाज़ को पुख्ता करने के लिए पत्ती की ओर मुँह करके कहा, 'क्या तुम ही बोल रही हो?"

"हाँ-हाँ मैं ही तुमसे कुछ कह रही थी।"

"तुम किस बात का धन्यवाद दे रही थीं?"

"जब तुमने मुझे पकड़ा तो लगा कि तुम मुझे बाहर फेंक दोगे। पर तुमने मुझे यहीं रख लिया। इसी बात का धन्यवाद दे रही थी। क्योंकि मैं तुमसे कुछ बतियाना चाह रही थी।" पत्ती ने कहा।

वरुण को मज़ा आने लगा। पत्ती बातें करे, यह काफी अनोखी बात थी। "तो आओ, हम दोनों बातें करते हैं। मेरी भी इच्छा तुम्हारे बारे में जानने की है," उसने कहा।

"क्या जानना चाहते हो तुम मेरे बारे में?" पत्ती ने पूछा।

"मेरी तो इच्छा बहुत कुछ जानने की है। पर अच्छा होगा कि तुम मेरे पास आई हो तो तुम खुद ही अपने बारे में बताओ।" वरुण ने कहा।

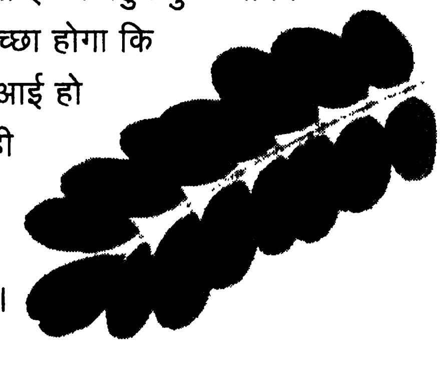

"हाँ! तुमने एक बात और देखी होगी कि किसी भी पौधे में सारी पत्तियाँ एक जैसी ही मिलेंगी। भले ही उनका आकार छोटा-बड़ा हो। सिर्फ इतना ही नहीं। नीम के एक पेड़ की पत्तियाँ नीम के ही किसी और पेड़ की पत्तियों से भी मिलती-जुलती होंगी, पर ये पत्तियाँ आम या जामुन के पेड़ की पत्तियों से बिल्कुल फर्क होंगी। जबकि जामुन के सभी पेड़ों की पत्तियाँ मिलती-जुलती होंगी।"

"तुम कभी खूब खुरदुरी और कभी काफी चिकनी होती हो? इसका क्या कारण है?" वरुण ने एक और सवाल किया।

"यह तुमने खूब ध्यान दिया," पत्ती ने कहा। "अब तुम अपने को ही देखो न। तुम्हारे दोस्तों में ही कोई लम्बा है तो कोई छोटा। कोई गोरा है तो कोई काला, कोई मोटा है तो कोई दुबला। इसी तरह पत्तियों में भी कई प्रकार हैं। यह सब तो बहुत सारी बातों पर निर्भर करता है जैसे पेड़ किस इलाके का है, वहाँ का मौसम कैसा है? पेड़ की ज़रूरतें किस प्रकार की हैं, आदि। अच्छा चलो तुम तरह-तरह की पत्तियाँ इकट्ठा करके देखो। न सिर्फ इनके किनारों का कटाव बल्कि इनका आकार, जाली की बनावट,

"तो सुनो! पत्ती ने जवाब दिया, खूब सारे कामों में आने वाली हम पत्तियाँ तरह-तरह के रूपों में मिलती हैं। जहाँ तक रंगों का सवाल है, तो अधिकतर तो तुम हमें हरे रंग में ही पाओगे। पर कुछ पौधों जैसे लाल भाजी में सभी पत्तियाँ लाल रंग की होती हैं। पर कई पेड़ों में नई-नवेली पत्तियों का रंग लाल होता है जो उम्र बढ़ने पर हरा हो जाता है जैसे आम, अमलतास आदि।"

"तुम्हारे किनारे खूब चिकने हैं? पर कभी-कभी तो ये दाँतेदार भी दिखते हैं?" वरुण ने कहा।

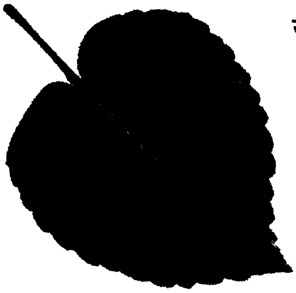

खुरदुरापन या चिकनापन आदि भी अलग-अलग होगा।

"मैंने देखा है कि पत्तियाँ पेड़-पौधों पर हज़ारों की संख्या में लगी होती हैं।" वरुण ने कहा। "आखिर पौधे को इतनी सारी पत्तियों की ज़रूरत क्या है?"

"तुमने बहुत खूब सवाल पूछा है। वास्तव में हम पत्तियाँ ही मिलकर पूरे पौधे के लिए भोजन बनाती हैं, जिससे पौधा फूलता-फलता है। इसलिए जैसे-जैसे पौधा बड़ा होता जाता है उसे ज़्यादा भोजन की ज़रूरत पड़ती है। और ज़्यादा भोजन बनाने के लिए ज़रूरत होती है ढेर सारी पत्तियों की।" पत्ती ने जवाब दिया।

"तुम भोजन बनाती हो?" वरुण ने आश्चर्य से पूछा। "भोजन तो मेरी माँ भी बनाती है। पर तुम्हारा किचन तो किसी पेड़ पर नहीं दिखता है?"

"वास्तव में मैं तुम्हारी माँ की तरह भोजन नहीं बनाती हूँ। मेरा भोजन बनाने का तरीका अलग है।" अब पत्ती को भी वरुण की बातों में मज़ा आने लगा। मैं सूर्य के प्रकाश की उपस्थिति में पानी और कार्बन डायऑक्साइड नामक एक गैस लेकर पौधे के लिए ग्लूकोज़ नामक भोजन बनाती हूँ। इसी भोजन का उपयोग करके पौधे अच्छे-खासे, मोटे-ताज़े हो जाते हैं। इसमें जड़ें भी मेरी मदद करती हैं। ज़मीन से पानी सोखने का काम वही तो करती हैं।"

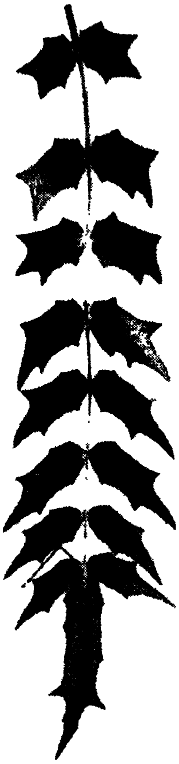

"सूर्य का प्रकाश, पानी और कार्बन डायऑक्साइड, यदि ये तीनों चीज़ें हों तो भोजन बन सकता है?"

"बन तो सकता है पर यह काम केवल हरी-हरी पत्तियाँ ही कर सकती हैं। वह इसलिए कि हमारे हरे रंग में एक ऐसी खास चीज़ है जिसके कारण हम भोजन बना पाती हैं। बगैर इसके इस तरह से भोजन नहीं बन सकता।"

तो अब मैं समझा कि तुम्हारे बिना पौधा ज़िन्दा ही नहीं रह सकता है," वरुण ने कहा।

"नहीं! यह बात पूरी तरह सही नहीं है," पत्ती ने फिर समझाना शुरू किया। "तुम्हारे शरीर में हाथ, पैर, आँख, कान, नाक, मुँह आदि सबका अपना-अपना काम है न। और हर अंग की अपनी अहमियत है। एक अंग के खराब होने पर तुम्हें तकलीफ़ होती है। ठीक उसी तरह पौधों में भी सभी अंगों के आपसी तालमेल से ही वह जीवित रह पाता है। जड़ें पानी खींचकर पौधों के ऊपरी हिस्सों को देती हैं, तना सभी हिस्सों को अपने ऊपर जमाकर रखता है, पत्तियाँ भोजन बनाती हैं, फूल प्रजनन करते हैं और

फल बीज तैयार करके वंश को आगे बढ़ाते हैं। इसलिए ये सभी अंग पौधे के लिए ज़रूरी हैं।"

"तो क्या पत्तियाँ पौधों के वंश को आगे नहीं बढ़ा सकतीं?" वरुण ने फिर सवाल पूछा।

"वैसे तो हमारा इस काम से सीधा सम्बंध नहीं है," पत्ती ने कहा। "पर यदि तुमने पत्थरचट्टा नामक पौधा देखा हो तो उसकी पत्ती के किनारों पर चारों ओर दानेनुमा उभार ज़रूर देखे होंगे। ये बाद में छोटे-छोटे पौद बन जाते हैं। थोड़े समय बाद ये पत्तियों से अलग होकर मिट्टी में गिरकर नए पौधे के रूप में उगने लगते हैं। पर इस तरह से पत्तियों के मार्फत प्रजनन केवल कुछ ही पौधों में होता है।"

"मैंने एक बार पढ़ा था कि पत्तियाँ रूपान्तरित भी होती हैं। क्या तुम बता सकती हो कि ये कैसे होता है?" वरुण ने एक सवाल और दाग दिया।

"दरअसल वरुण, किसी-किसी पेड़-पौधे में हम पत्तियों को कभी-कभी ऐसे काम भी करना होते हैं जो हम आमतौर पर नहीं करती हैं।" पत्ती ने कहा। "ज़ाहिर है इन कामों को करने के लिए हमें अपने आप में कुछ बदलाव लाना पड़ेगा। इन्हीं बदलावों को रूपान्तरण कहा जाता है।

जैसे तुम कभी मटर के पौधों को ध्यान से देखना। उसमें संयुक्त पत्ती होती है जिसमें छोटी-

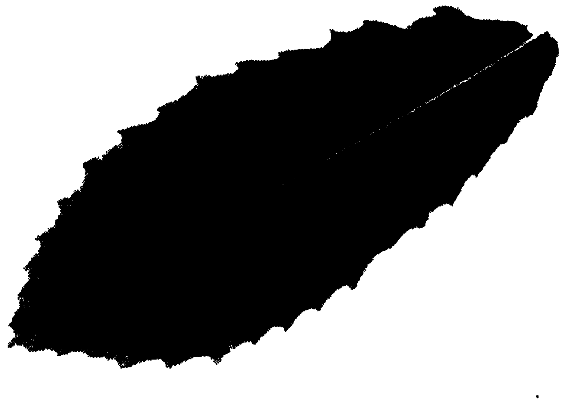

छोटी पत्ती जैसी रचनाएँ होती हैं जिन्हें पहाक कहते हैं। ये सभी एक ही पत्ती का हिस्सा होते हैं। इस पूरी पत्ती का अगला भाग पतला धागे जैसा और स्प्रिंग की तरह घुमावदार होता है। यह हिस्सा कमज़ोर पौधे को सहारा देने का काम करता है।

इसके अलावा भी हम कई प्रकार से परिवर्तित हो जाती हैं। कभी फूल की तरह, कभी तने की तरह तो कभी कुछ और।"

"क्या तुम मुझे इन रूपान्तरणों के बारे में बताओगी।" वरुण ने पूछा।

"ज़रूर बताऊँगी," पत्ती ने कहा। "परन्तु आज नहीं, किसी और दिन। अभी तो तुम्हारे दोस्त सैर के लिए तुम्हें बुलाने आए हैं। वो देखो!"

तभी बाहर से राहुल की आवाज़ आई, "वरु..ण चलेगा क्या घूमने? वरुण उचककर पलंग से उठा। उसने पत्ती को सम्भालकर अपनी डायरी में रखा और बाहर चल दिया।

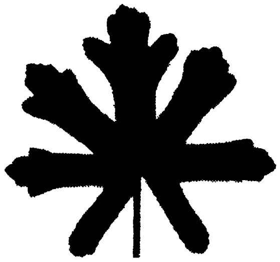

सभी चित्र द विजुअल डिक्शनरी ऑफ प्लाण्ट्स एवं द मेकमिलन कलर लाइब्रेरी की प्लाण्ट्स से साभार

हाथी का जूता

एक बार हाथी दादा ने
खूब मचाया हल्ला,
चलो तुम्हें मेला दिखला दूँ
खिलवा दूँ रसगुल्ला!

पहले मेरे लिए कहीं से
लाओ नया लबादा,
अधिक नहीं बस एक तम्बू ही
मुझे सजेगा ज्यादा!

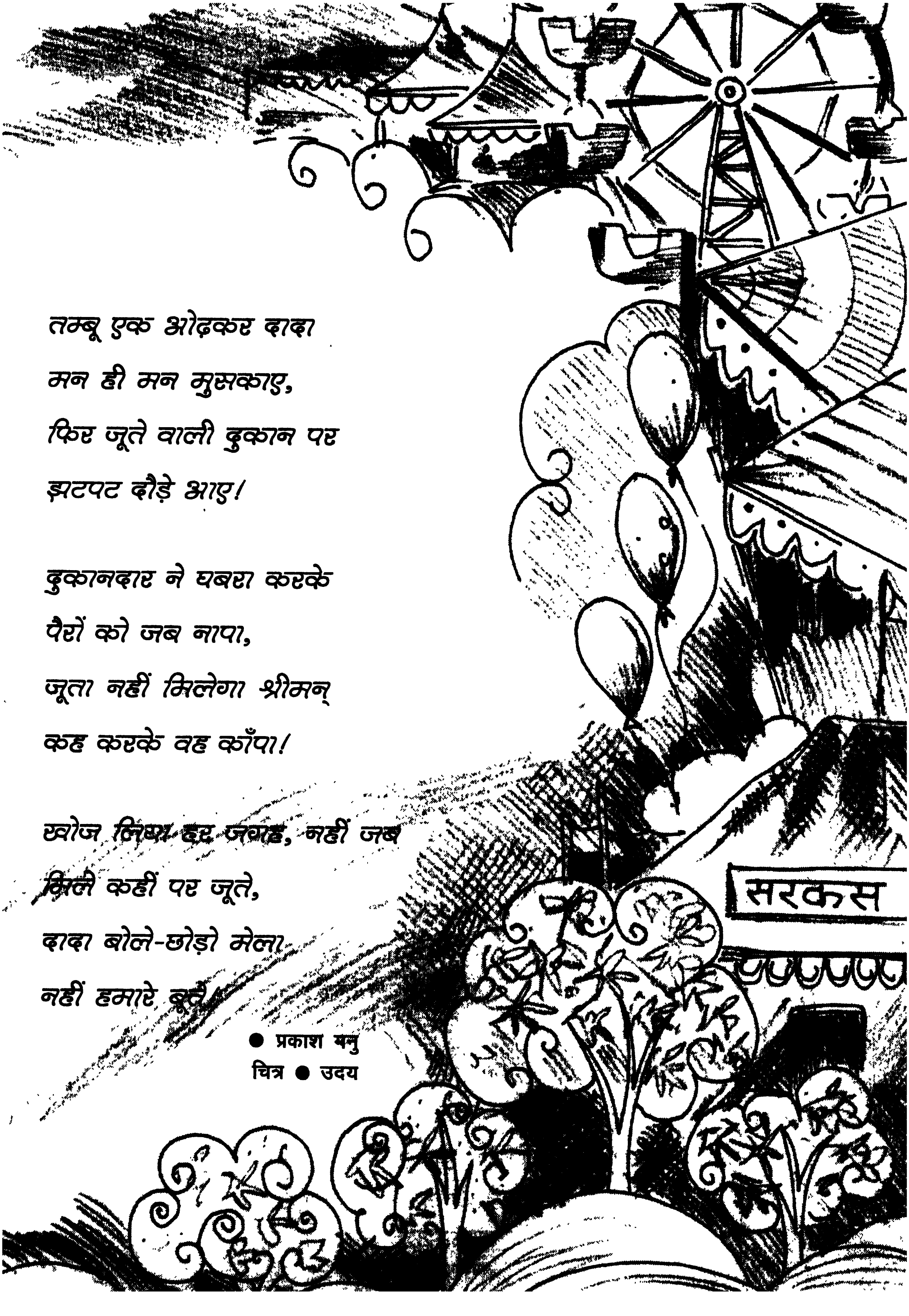

तम्बू एक ओढ़कर दादा
मन ही मन मुसकाए,
फिर जूते वाली दुकान पर
झटपट दौड़े आए!

दुकानदार ने घबरा करके
पैरों को जब नापा,
जूता नहीं मिलेगा श्रीमन्
कह करके वह काँपा!

खोज लिया हर जगह, नहीं जब
मिले कहीं पर जूते,
दादा बोले-छोड़ो मेला
नहीं हमारे बूते!

● प्रकाश मनु
चित्र ● उदय

सिंह और कुत्ता

लेव तोल्सतोय

एक बार लंदन में जंगली जानवरों का प्रदर्शन किया जा रहा था। उन्हें देखने के लिए दर्शकों को पैसे देने पड़ते थे या बिल्लियाँ और कुत्ते लाने होते थे जो जंगली जानवरों को खिलाए जाते थे।

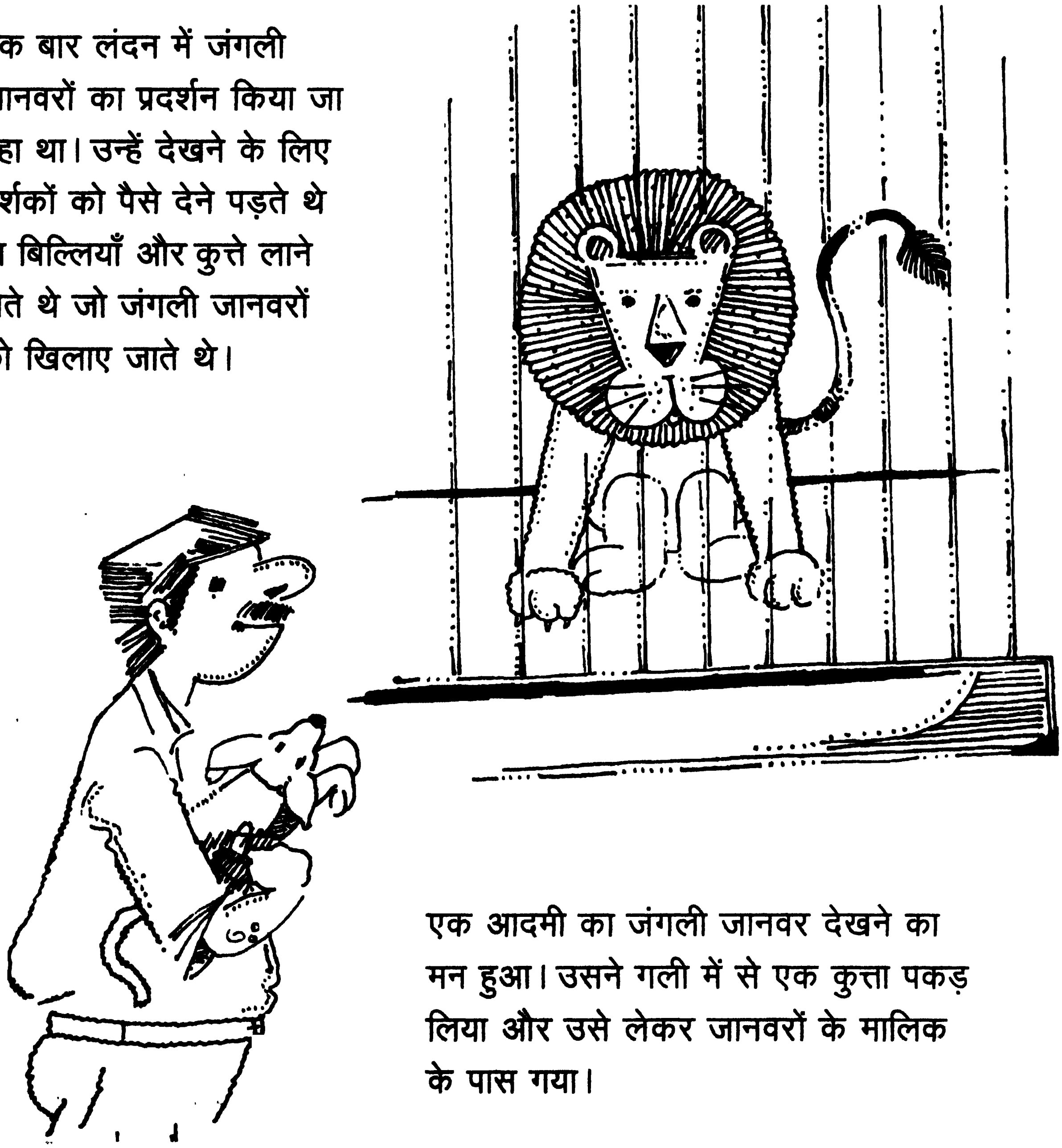

एक आदमी का जंगली जानवर देखने का मन हुआ। उसने गली में से एक कुत्ता पकड़ लिया और उसे लेकर जानवरों के मालिक के पास गया।

इस आदमी को जानवर देखने की इजाज़त दे दी गई और कुत्ते को शेर के पिंजरे में फेंक दिया गया। इस छोटे से कुत्ते ने टाँगों के बीच दुम दबाई और कोने में दुबककर बैठ गया।

सिंह उसके पास आया और उसने कुत्ते को सूँघा। कुत्ता पीठ के बल लेट गया। पंजे ऊपर की ओर उठा लिए और दुम हिलाने लगा। सिंह ने उसे अपने पंजों से छुआ और उछाल दिया।

छोटा-सा कुत्ता उछलकर खड़ा हुआ और अपनी पिछली टाँगों के बल सिंह के सामने बैठ गया। सिंह इस छोटे से कुत्ते को ध्यान से देखता रहा। उसने दाएँ-बाएँ अपना सिर हिलाया, मगर कुत्ते को नहीं छुआ!

जंगली जानवरों के मालिक ने जब सिंह के पिंजरे में माँस फेंका तो सिंह ने उसमें से एक टुकड़ा काट लिया और बाकी कुत्ते के लिए छोड़ दिया।

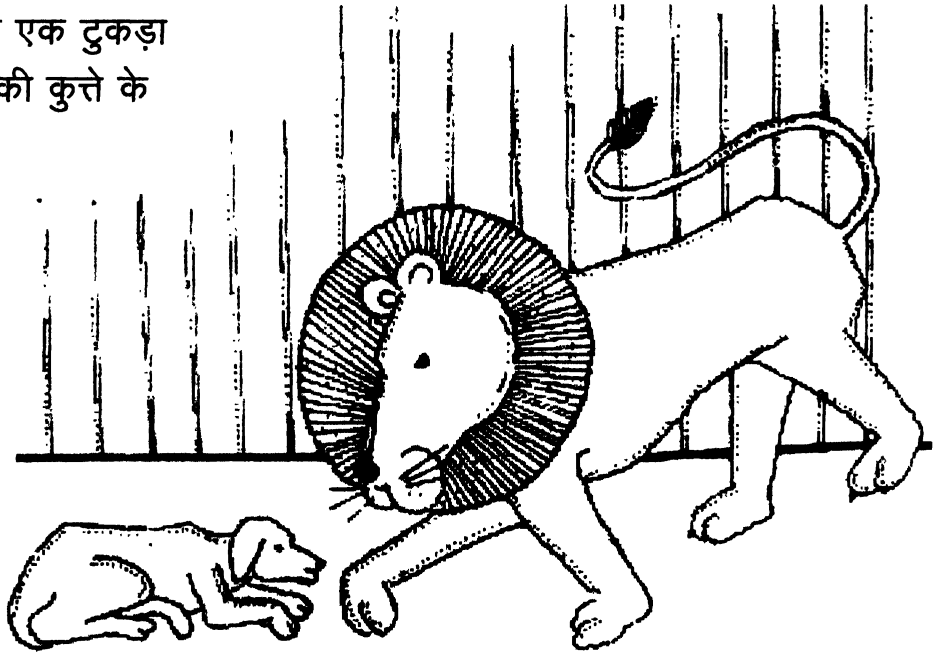

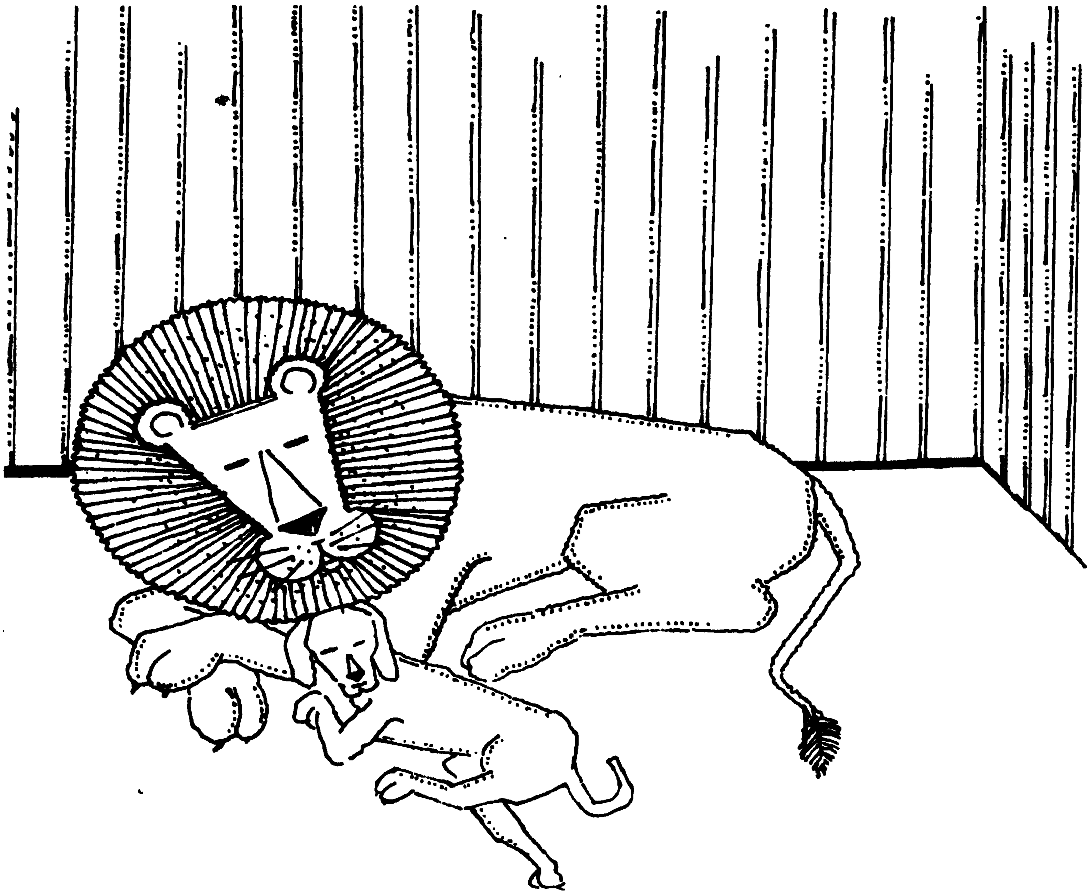

शाम हुई तो सिंह सोने के लिए लेट गया। कुत्ता भी सिंह के करीब लेट गया और उसने अपना सिर सिंह के पंजे पर रख दिया। उस दिन से यह छोटा-सा कुत्ता सिंह के साथ ही रहने लगा। सिंह ने कभी भी उसे किसी तरह की हानि नहीं पहुँचाई। वह मालिक द्वारा दिया गया माँस खाता, कुत्ते के साथ ही सोता और कभी-कभार उसके साथ खेलता भी।

एक दिन एक रईस जंगली जानवरों को देखने आया। उसने अपना कुत्ता पहचान लिया। उसने जानवरों के मालिक से कहा कि कुत्ता उसका है। उसने अनुरोध किया कि कुत्ता उसे लौटा दिया जाए। मालिक ने कुत्ता लौटाना चाहा, मगर जैसे ही कुत्ते को पिंजरे से बाहर आने के लिए बुलाया जाने लगा कि सिंह की गर्दन गुस्से से तन गई और वह गरजने लगा। इस तरह वह छोटा-सा कुत्ता और सिंह साल भर एक ही पिंजरे में रहे।

एक साल बाद कुत्ता बीमार हुआ और मर गया। सिंह ने खाना-पीना छोड़ दिया। कुत्ते को सूँघता रहा, चाटता और पंजे से हिलाता-डुलाता रहा। सिंह जब यह समझ गया कि कुत्ता मर चुका है, तो वह अचानक उछलकर खड़ा हुआ। उसके अयाल तन गए। वह दुम को अगल-बगल मारने लगा। बार-बार पिंजरे की सलाखों से टकराने और फर्श को नोंचने लगा। सिंह दिन भर सलाखों से टकराता, छटपटाता और गरजता तड़पता रहा। फिर वह मृत कुत्ते के पास जाकर पड़ा रहा और चुप हो गया।

मालिक ने मरे हुए कुत्ते को वहाँ से हटाना चाहा, मगर सिंह ने किसी को उसके पास फटकने भी नहीं दिया। मालिक ने सोचा अगर सिंह को दूसरा कुत्ता दे दिया जाए तो वह अपना दुख भूल जाएगा। उसने एक ज़िन्दा कुत्ता पिंजरे में छोड़ दिया। मगर सिंह ने फौरन ही उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। फिर वह मृत कुत्ते का अपने पंजों से आलिंगन किए हुए उसी तरह पाँच दिनों तक पड़ा रहा।

छठे दिन सिंह मर गया।

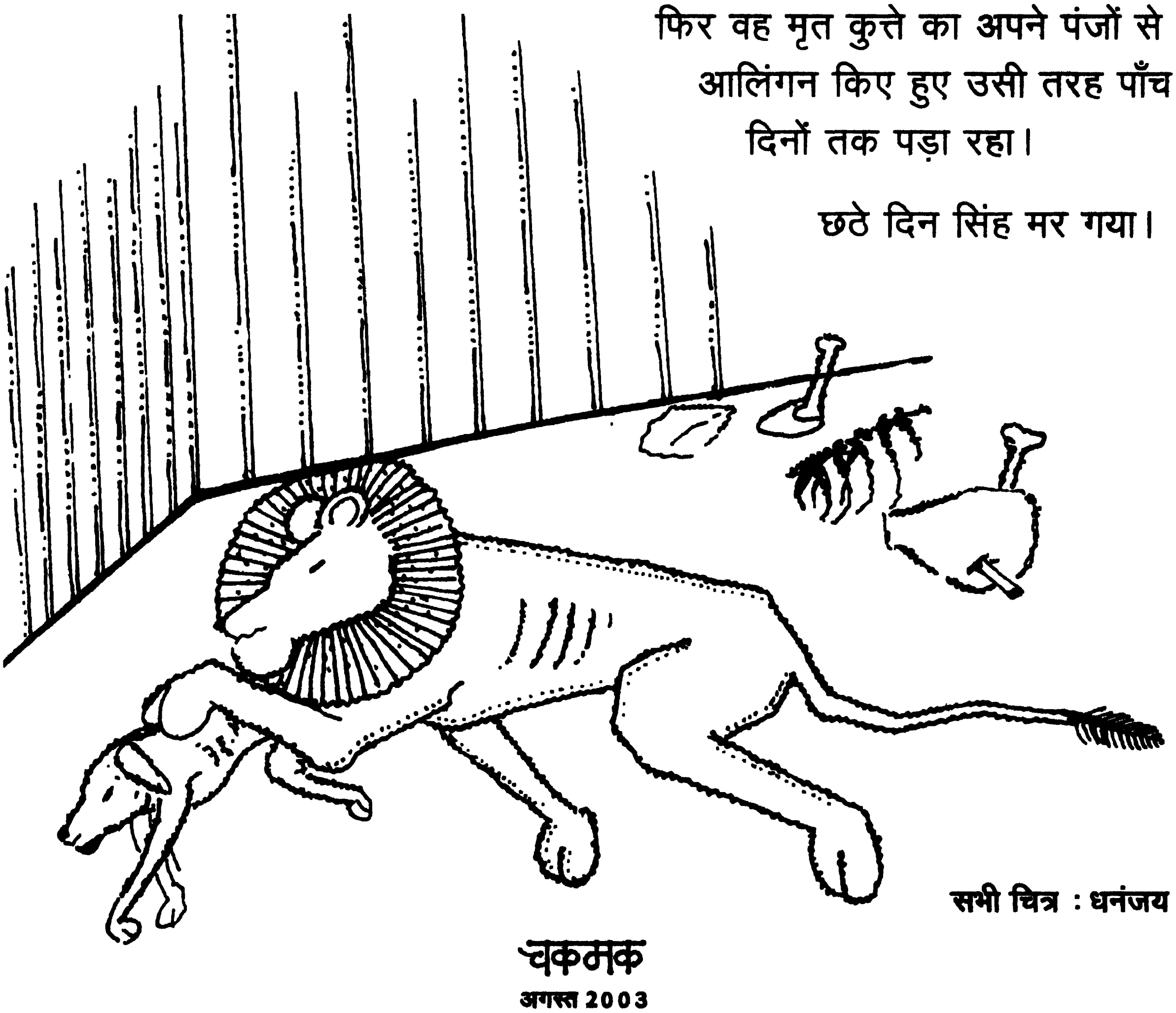

सभी चित्र : धनंजय

छूना और देखना

तुम जानते ही हो कि हम अपने आसपास की दुनिया के बारे में अपनी इंद्रियों की मदद से महसूस करते हैं। आँखों की मार्फत देखते हैं, कानों से सुनते हैं, नाक से सूँघते हैं, जीभ से स्वाद लेते हैं और चमड़ी या त्वचा के ज़रिए छूकर किसी चीज़ का एहसास करते हैं। तो इस बार प्रयोगशाला में हम अपनी नज़रों और स्पर्श के बारे में कुछ प्रयोग करेंगे। और चित्र बनाकर देखेंगे कि हम लोग अपनी आँखों से कितना बारीक अवलोकन कर पाते हैं और कितना छूकर।

इस गतिविधि के लिए अपने तीन-चार साथियों को बुला लो। तुम्हें आठ-दस किस्म की पत्तियों की ज़रूरत होगी। जितने दोस्त इसे करना चाहें उतने कागज़ के लिफाफे जुटा लो। कागज़ के इसलिए कि उनमें से आर-पार नहीं दिखता।

हर लिफाफे में एक पत्ती डाल दो। हर दोस्त को एक-एक लिफाफा दे दो। हाँ, यह ध्यान रखना कि तुम्हारे दोस्त यह न देख पाएँ कि उनके लिफाफे में कौन-सी पत्ती डाली जा रही है।

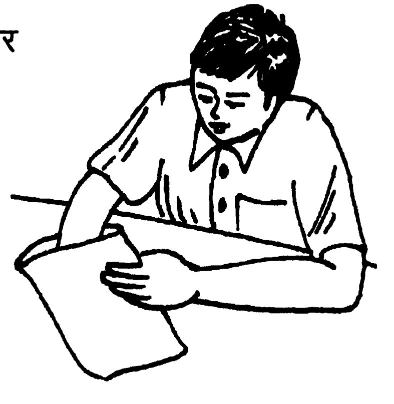

बस अब अपने दोस्तों को कहो कि वे अपने-अपने लिफाफे में हाथ डालकर पत्ती को छुएँ। और अंदाजा लगाएँ कि वो किस पौधे की पत्ती है। फिर हर कोई लिफाफे में हाथ डालते हुए ही पत्ती को बारीकी से टटोलकर उसका चित्र भी बनाए। इस पूरी प्रक्रिया में पत्ती को आँखों से नहीं देखना है।

जब बग़ैर देखे चित्र बनाने का यह दौर पूरा हो जाए तो लिफाफे से पत्ती निकालना है। अब इसी पत्ती को देखकर चित्र बनाना है।

कौन-सा चित्र ज़्यादा बारीकी से बना है? बग़ैर देखे बनाया हुआ या देखकर बनाया हुआ।

क्या और कोई तरीका भी है जिससे पत्ती को बग़ैर देखे पहचानने की कोशिश कर सकते हैं?

माथापच्ची
जुलाई 2003 अंक के हल

1. म्याऊँ में 20 त्रिभुज छिपे हैं।

2. 30 = 6 x 6 − 6
   30 = 5 x 5 + 5
   24 = 22 + 2

4. लौकी, करेला, गिलकी, मटर और पालक।

चित्र पहेली का हल

ब	र	ग	द		ब	हे	लि	या
ग			वा	य	स			ता
दा	व	न				चि	ड़ि	या
द		क		सं	गी	त		त
	ल	ब				क	ड़ा	
रे		पो	लि	यो		ब		आ
त	पि	श				रा	जी	व
घ			शी	क	र			र
र	स्सा	क	शी		स	म	को	ण

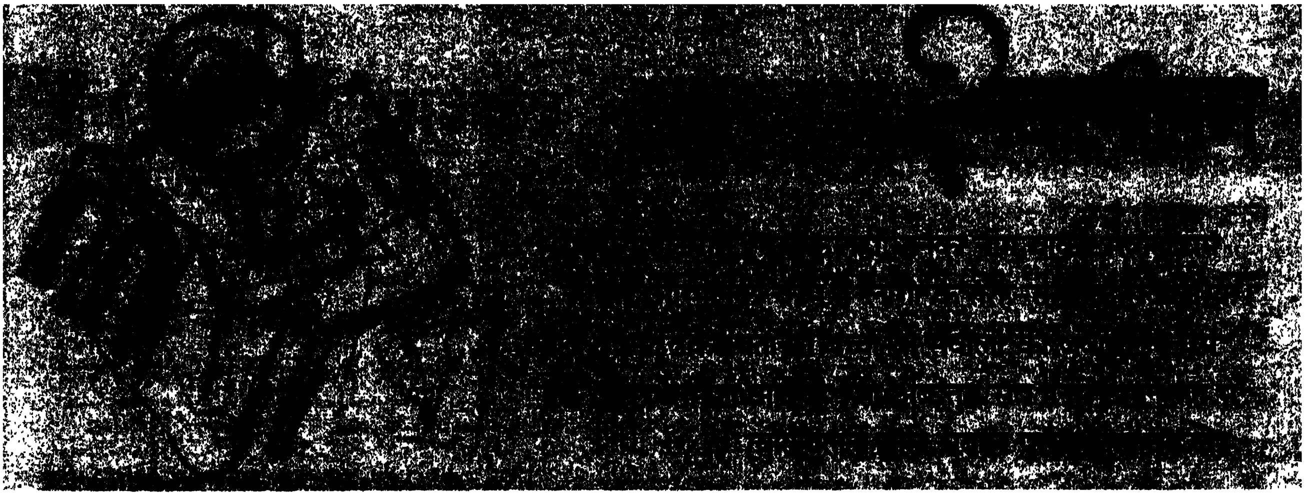

नागफनी का पौधा पानी न देने पर भी सूखता क्यों नहीं है ?

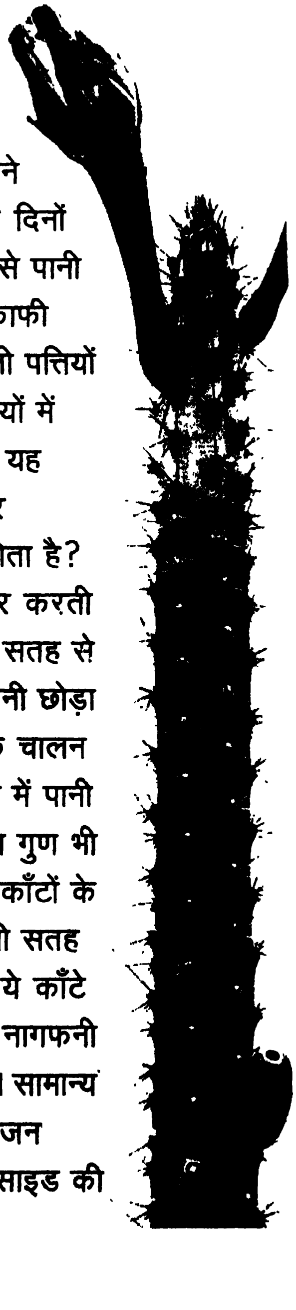

नागफनी का दिखने वाला हरा भरा भाग उसके तने का परिवर्तित रूप है। ऐसे पौधे कम पानी वाले इलाके में पाए जाते हैं। नागफनी के अलावा कई और प्रकार के पौधे भी होते हैं। जिनका विकास इस तरह हुआ है कि वे कम पानी मिलने पर भी अपना गुज़ारा कर लेते हैं। इसके तनों में न केवल पानी जमा करने की क्षमता होती है बल्कि पानी का खर्च भी कम होता है। इसलिए ही ये अधिक दिनों तक वर्षा न होने पर भी जिन्दा रह जाते हैं। सामान्य पौधे वर्षा न होने पर पृथ्वी से पानी प्राप्त कर लेते हैं। और पत्तियों से हवा में पानी छोड़ते रहते हैं। इसमें पानी की काफी अधिक मात्रा खर्च होती रहती है। हवा से कार्बन डायआक्साइड की अदला-बदली पत्तियों में बने छोटे छोटे छिद्रों या पोरों (स्टोमेटा) के माध्यम से होती है। पौधे की पत्तियों में पानी के वाष्प का दाब बाहर के दाब से सामान्य तौर पर अधिक होता है। इससे यह वाष्प बाहर आती रहती है। यह क्रिया तेज हवा और सूखे मौसम में होती है। और सामान्य की अपेक्षा अधिक पानी खर्च होता है। तुम बता सकते हो ऐसा क्यों होता है?

पौधों में खर्च होने वाले पानी की मात्रा पत्तियों के क्षेत्रफल पर भी निर्भर करती है। जितनी अधिक पत्तियों की सतह सूर्य के सामने होगी, उतना ही अधिक पानी सतह से छोड़ा जाएगा। सामान्य तौर पर पत्तियों का पानी छोड़ा जाना उसमें भोज्य पदार्थ (लवण) आदि के चालन में भी मदद करता है। नागफनी के पौधे में पानी का खर्च कम करने के लिए कुछ विशेष गुण भी नजर आते हैं। इसमें पत्तियाँ छोटे-छोटे काँटों के रूप में होती है। इसमें पानी छोड़ने वाली सतह का क्षेत्रफल काफी कम हो जाता है। ये काँटे नागफनी को जानवरों से भी बचाते हैं। नागफनी का तना जो कई भागों में बँटा होता है। सामान्य पत्तियों के सभी काम करता है। वह भोजन बनाता है और हवा से कार्बन डायआक्साइड की

अदला - बदली करता है। तने का आकार ऐसा होता है कि सूरज के सामने पड़ने वाली सतह का क्षेत्रफल कम से कम हो। जैसे बेलन के आकार के गोल तने पर सूरज की किरणें सीधी कम पड़ती हैं। तने में बने बहुत कम छिद्र ही सूरज की दिशा में होते हैं। इस सब के अलावा पानी की मात्रा बचाने के लिए तने पर एक मोटी मोमनुमा परत होती है। साथ ही तने में पानी जमा करने की क्षमता होती है। इसीलिए नागफनी के तने मोटे भी होते हैं। इन सब विशेषताओं के कारण ही नागफनी को कम पानी की आवश्यकता होती है। और इसलिए ये काफी समय तक बिना पानी के जिन्दा रह सकते हैं। जबकि सामान्य पौधों में पानी बचाने के ऐसे साधन नहीं होते हैं। नागफनी मरूस्थल में पाया जाने वाला पौधा है। संसार में इसकी 1000 से अधिक प्रजातियाँ हैं। इसमें से कुछ प्रजातियाँ 10 से 20 मीटर ऊँची होती हैं। नागफनी की कुछ प्रजातियों में छोटे-छोटे पत्ते भी होते हैं। नागफनी की जड़ें झकड़ा होती हैं। जड़ें बहुत गहरी नहीं होती हैं बल्कि सतह पर ही बहुत फैली होती हैं। वर्षा आते ही ये पानी सोखकर तने में जमा कर लेती हैं। नागफनी में प्रजनन फूल वाले और पौधों की तरह ही होता है। परागण के बाद बीज बनता है। बीज सूखे मौसम में सुप्त अवस्था में पड़े रहते हैं। नागफनी की कुछ प्रजातियों के फूल बड़े सुन्दर होते हैं। इनमें फूल आने पर मरूस्थल दूर-दूर तक रंगीन दिखने लगता है। कुछ बड़े-बड़े आकार की प्रजातियाँ दो साल तक बिना पानी के जिन्दा रह सकती हैं। नागफनी के अलावा कई और पौधे भी कई और तरीकों से विपरीत परिस्थितियों में पानी और भोजन इकट्ठा करते हैं। क्या तुम कुछ ऐसे उदाहरण जानते हो? ••

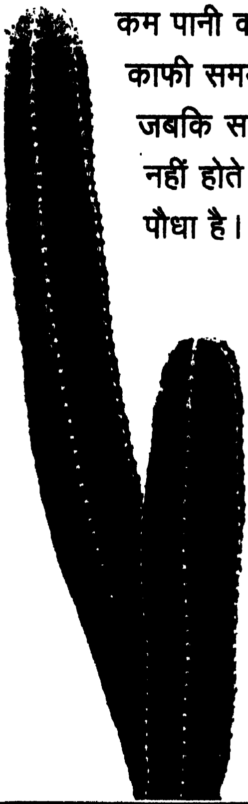

सभी चित्र द कम्पलीट बुक

हरी और भोला
दो दोस्त थे, हरी और भोला. दोनों अपने को बहुत होशियार समझते थे...... . .
एक दिन खेलते हुए हरी को चमकता हुआ "कुछ" दिखा...
वह क्या है ?
अरे वाह ! यह तो चाँदी का सिक्का है.
मैं इससे कुछ भी खरीद सकता हूँ. . .पर क्या खरीदूँ ?
अभी इसे कहीं छुपा देता हूँ जब मन करेगा निकाल लूँगा.
लेकिन मैं यह जगह भूल गया तो. . .
ज़मीन में गाड़ना सबसे सुरक्षित रहेगा, किसी को पता भी नहीं चलेगा .

एक आइडिया आया. . .
अब नहीं भूलूँगा यह जगह! और किसी को पता भी नहीं चलेगा कि मैंने यहाँ सिक्का छिपाया है .
यहाँ मैंने सिक्का नहीं छिपाया है. .
कुछ देर बाद भोला घूमता हुआ वहाँ से निकला. . .
हूँ ! तो ज़रूर यहाँ सिक्का छिपाया गया है .
खोदकर देखता हूँ
हुर्रेऽ.ऽ! मिल गया सिक्का
लेकिन किसी को पता चल गया कि ये सिक्का मैंने निकाला है तो . . एक काम करता हूँ. . . .
अब कोई मुझे नहीं पकड़ पाएगा .
भोला ने सिक्का नहीं चुराया है

समुद्री घोड़ा

समुद्री जंतुओं की दुनिया बड़ी ही निराली है। समुद्र में कई जंतु तो रंग-बिरंगे और खूबसूरत होते हैं। और कई विशिष्ट आकार, व्यवहार लिए होते हैं। इसी रंग बिरंगी और निराली समुद्री दुनिया का एक सदस्य है समुद्री घोड़ा!

दरअसल समुद्री घोड़ा एक प्रकार की मछली है। इसका आकार घोड़े से मिलता जुलता है। इसीलिए इसका यह नाम पड़ गया है। यह काफी कुछ शतरंज के घोड़े वाले मोहरे जैसा दिखता है। आकार में तो यह घोड़े जैसा है किन्तु व्यवहार और शारीरिक रचना में यह मछली के समान है।

जानते हो समुद्री घोड़े का सबसे दिलचस्प पहलू क्या है? यह कि इसका नर गर्भ धारण कर बच्चा पैदा करता है। यानी माँ समुद्री घोड़ा माँ तो बनती ही है, पापा समुद्री घोड़ा भी बाप बनने में अपनी सक्रिय भूमिका निभाता है। चलो देखें, कैसे होता है यह। समुद्री घोड़े के नर और मादा के समागम के बाद मादा अण्डे देती है। इन अण्डों को नर अपने शरीर में बनी एक विशेष थैली में रख लेता है। जब अण्डे पक जाते हैं तो इनमें से बच्चे निकलते हैं। इस प्रकार नर समुद्री घोड़ा बच्चों को जन्म देता है।

समुद्री घोड़ा रंग बदलने में भी माहिर है! साथ ही कुछ हद तक ये अपने आकार को भी बदल लेते हैं। कुछ समुद्री घोड़े खतरे को भाँपते ही रंग बदल लेते हैं। और इस तरह वे अपने दुश्मन को चकमा दे पाते हैं। हिन्द महासागर और भूमध्य सागर में पाए जाने वाले समुद्री घोड़े के शरीर पर गुलाबी, पीले, सफेद या गहरे नीले धब्बे होते हैं। खतरा होने पर ये समुद्र की तली में पत्थरों में सट जाते हैं। और चट्टानों के रंग के हो जाते हैं।

समुद्री घोड़े के शरीर पर हड्डी की कड़ी और मज़बूत प्लेटों का कवच होता है। इसकी पीठ पर एक पंख होता है। जब यह तैरता है तो पीठ का पंख तेज़ी से हिलाता

है। हालाँकि तैराक तो यह कमज़ोर ही है। समुद्री घोड़े के शरीर में हवा की एक थैली होती है। इसकी वजह से यह पानी में आसानी से उतराता रहता है। यदि इस थैली की हवा निकल जाए, तो इसका पानी में तैरना मुश्किल हो जाता है। ऐसी स्थिति में समुद्री घोड़ा समुद्र की तलहटी में तब तक पड़ा रहता है जब तक कि थैली की मरम्मत होकर उसमें हवा न भर जाए।

एक बात और, यह थैली मादा में नहीं होती। नर और मादा की पहचान नर में पाई जाने वाली इस थैली के आधार पर की जाती है।

समुद्री घोड़े की लगभग चालीस प्रजातियाँ होती हैं। इनमें सबसे छोटी एक इंच लम्बी और सबसे बड़ी एक फुट लम्बी होती है। दुनिया भर के सभी गर्म समुद्रों में इसकी विभिन्न किस्में देखी गई हैं।

प्रस्तुति : के. आर. शर्मा

चित्र एक्सप्लोरिंग द सीक्रेट्स ऑफ नेचर से साभार

कहा जाता है कि बच्चों के लिए कहानियों की अच्छी किताबें मिलती ही नहीं। कविताओं की तो फिर भी मिल जाती हैं। पर छोटी-छोटी मज़ेदार कहानियाँ हों, तो कितना मज़ा आए, है न? या तो हम खुद ही इन्हें पढ़ लें, या फिर कोई हमें पढ़कर सुना दे।

तो इस बार नवनीत प्रकाशन की "अनुपम कहानियाँ" नाम की 4 किताबों के एक सेट की चर्चा करते हैं। सोचा, चलो चकमक के सभी पाठकों से इन्हें बाँटते हैं। इनमें से हरेक किताब में 1-2 नहीं, पूरी 11-11 कहानियाँ हैं। चारों किताबें पूरी-पूरी रंगीन हैं और हर किताब की कहानी ज़्यादा से ज़्यादा 1 या 2 पेज लम्बी है। यानी बहुत लम्बी कहानी पढ़ते-पढ़ते बोर हो जाने का तो खतरा ही नहीं। फिर हर एक लिखे हुए पेज के साथ पूरे एक पेज के बहुत ही खूबसूरत चित्र भी हैं। यानी इन किताबों को सज़ाने की काफी कोशिश की गई है।

कवर के अन्दर वाले पेज और किताब के पहले और आखिरी पेज इस कोशिश से छूट गए हैं। ये पेज कुछ अजीब से हैं - रूखे-सूखे से। पर पहले पेज को पलटकर आगे बढ़ो तो मुल्ला नसीरुद्दीन की कोई बहुत ही रोचक कहानी तुम्हारा इंतज़ार करती मिलेगी। चारों किताबों की शुरुआत मुल्ला नसीरुद्दीन की किसी कहानी से ही होती है। एक कहानी **कुछ नहीं** पढ़ो - मज़ा आएगा।

सिर्फ कहानी ही मज़ेदार नहीं, बाएँ पेज पर दी कहानी के लिए दाएँ पेज पर चित्र बने हैं। यही खाका चारों किताबों की हर कहानी का है। और चित्र भी बहुत सुन्दर हैं। रंगीन तो हैं है, साथ ही बहुत आकर्षक भी हैं। रोचक हाव-भाव लिए पात्र हैं इनमें। बाएँ पेज पर दी कहानी के इर्द-गिर्द सुन्दर बेल-बूटे वाला बॉर्डर भी है। चारों किताबों के लिए चार अलग-अलग बार्डर! चारों किताबों में बस एकाध जगह ही चित्रों में विदेशी या ऐसी शहरी अदाएँ देखने को मिलती हैं जो आम बच्चों को विचित्र लग सकती हैं। जैसे - पहली किताब (भाग-1) के पेज 5 पर बना सिंह। यह सिंह टेबल-कुर्सी पर बैठकर नैपकिन लगाकर भेड़िए का खून पीता कुछ अजीब ही लगता है।

जहाँ तक कहानियों की बात है - चारों किताबों में लगभग 10-15 कहानियाँ ऐसी होंगी जिन्हें पढ़कर तुम्हें खूब मज़ा आएगा। बाकी में कुछ तो ठीक-ठाक सी हैं पर उनके अंत में जो भाषण देने या पाठ पढ़ाने की कोशिश की है, वह उन ठीक-ठाक कहानियों को पढ़ने का मज़ा भी किरकरा कर देता है। यह बात और

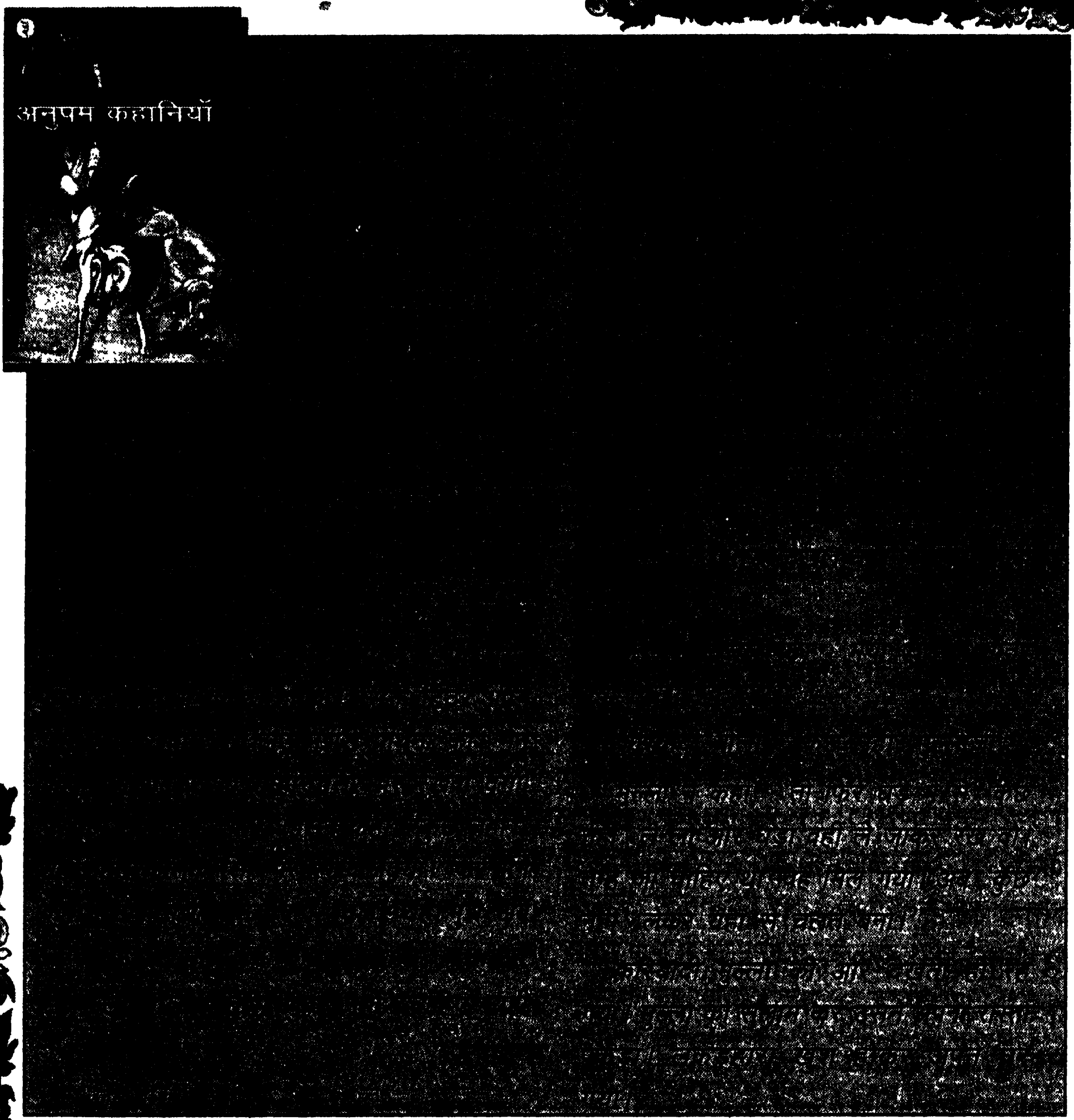

खलती है जब कहानी की सीख को अंत में अलग से एक डिब्बे में लिख दिया जाता है।

भई अगर किसी कहानी में कोई बात कही जा रही हो तो कहानी पढ़कर तो वह बात तुम्हें समझ में आ ही जाएगी, है न? और अगर कोई बात समझ में न आए, तो तुम किसी बड़े से पूछ लोगे। ऐसा ही करते हो न, तुम सब? फिर भी, पता नहीं क्यों ये बड़े तुम्हें इतना नासमझ समझते हैं। कहानी छापने के बाद वही बात फिर से लिखते हैं जो कहानी में कही जा रही थी।

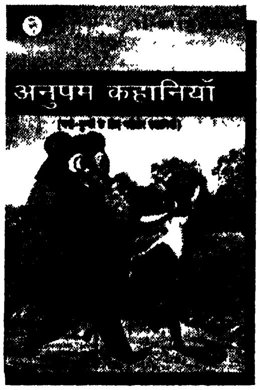

इन किताबों की सीख वाली कहानियों में कुछ दिक्कतें और भी हैं। कभी-कभी तो जो बातें कहानी में कही जा रही हैं और जो नसीहत के रूप में लिखी गई हैं, उनमें कोई ताल-मेल भी नहीं

दिखता। फिर कुछ कहानियाँ ऐसी भी हैं जिनकी नसीहतों को और खुद कहानी को भी आज के माहौल और आज की ज़रूरत के मुताबिक दोबारा लिखे जाने की ज़रूरत है। जैसे तीसरी किताब (भाग-3) की पेज 8 पर दी "ऊँट का नाच" नामक कहानी। चलो इस कहानी का एक हिस्सा पढ़ो -

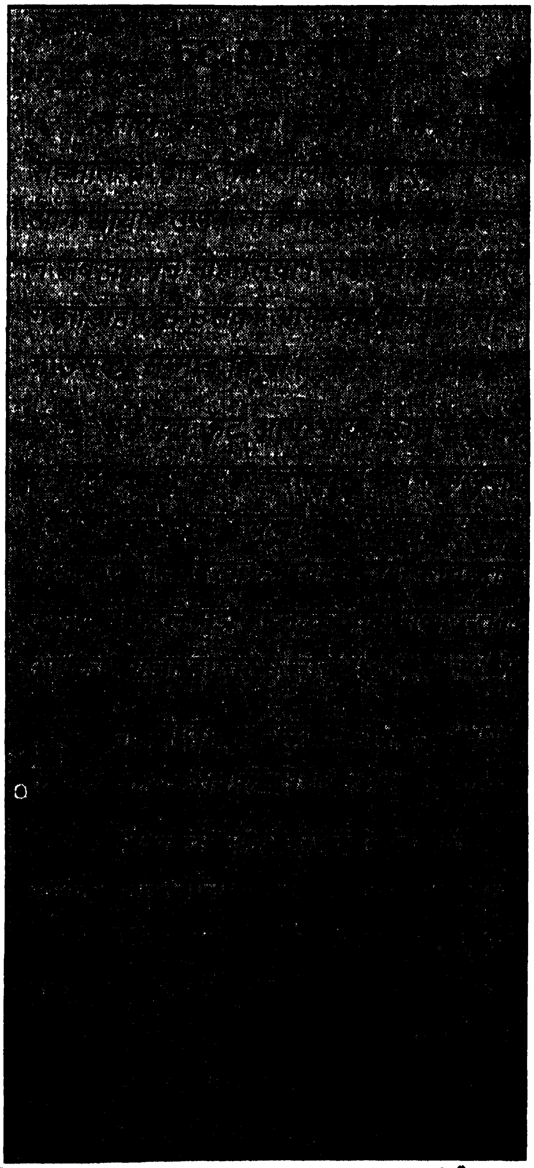

क्या इसे पढ़कर ऐसा नहीं लगता कि ऊँट के साथ थोड़ी नाइन्साफी की गई? ज़रा इसी कहानी को बच्चों पर लागू करके सोचो। मान लो एक बच्चे के सुन्दर नृत्य को देखकर एक और पोलियोग्रस्त बच्चे का भी नाचने का मन करने लगे। तो क्या उसके टेढ़े-मेढ़े अंगों की आड़ी-तिरछी थिरकन को देखकर हँसोगे? शायद नहीं। बच्चों में एक-दूसरे के लिए इतना तो सम्मान होता ही है कि वे एक-दूसरे की कमज़ोरियों को जानते हुए भी उनके उत्साह को बढ़ावा दे सकें।

खैर, ये तो थी इन किताबों की कुछ कमियाँ। पर जो अच्छी कहानियाँ इनमें हैं - वे सचमुच बहुत रोचक हैं। उन्हें तुम बार-बार पढ़ना चाहोगे। इनमें बच्चों की बहुत प्रिय बन्दर और मगर वाली कहानी भी है जिसमें मगर की पत्नी बन्दर का कलेजा खाना चाहती है। तुम्हें याद है न? कैसे बन्दर सूझ-बूझ से नदी के बीच से किनारे पर लगे अपने जामुन के पेड़ तक पहुँच जाता है और मगर से अपना पीछा छुड़ाता है।

कुल मिलाकर चार किताबों का यह सेट तुम तक रोचक कहानियाँ पहुँचाने में मददगार होगा। कहानियों को चुनते समय थोड़ा ध्यान और दिया जाता तो और अच्छी बन जातीं ये। फिर भी चित्रों और सजावट की नज़र से देखो तो किताबें तुम्हें बहुत पसन्द आएँगी। कहीं मौका लगे तो ये किताबें पढ़ना ज़रूर। हरेक किताब की कीमत 22.00 रु. है। यह बहुत सस्ती तो नहीं, पर बहुत महँगी भी नहीं हैं।

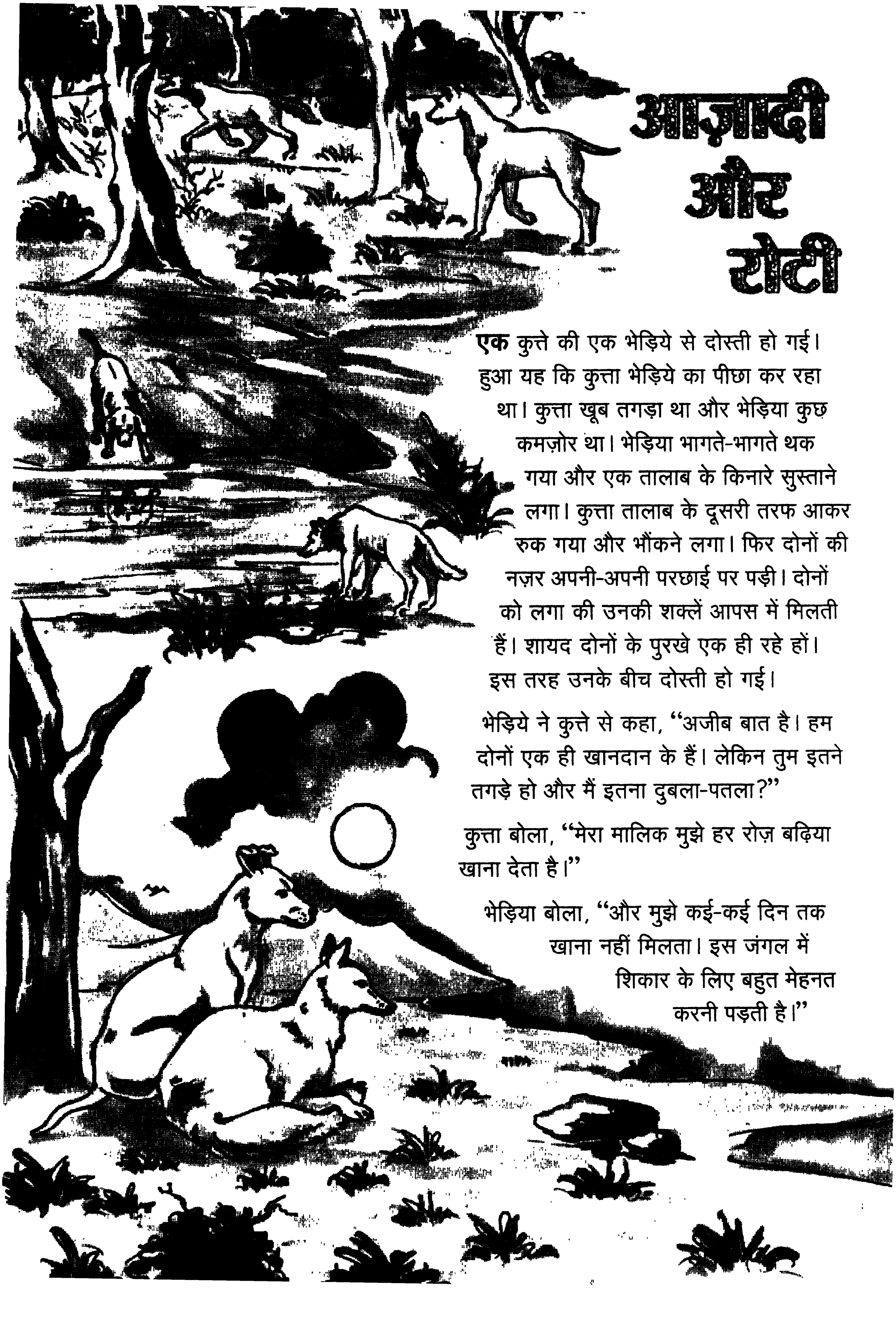

आज़ादी और रोटी

एक कुत्ते की एक भेड़िये से दोस्ती हो गई। हुआ यह कि कुत्ता भेड़िये का पीछा कर रहा था। कुत्ता खूब तगड़ा था और भेड़िया कुछ कमज़ोर था। भेड़िया भागते-भागते थक गया और एक तालाब के किनारे सुस्ताने लगा। कुत्ता तालाब के दूसरी तरफ आकर रुक गया और भौंकने लगा। फिर दोनों की नज़र अपनी-अपनी परछाई पर पड़ी। दोनों को लगा की उनकी शक्लें आपस में मिलती हैं। शायद दोनों के पुरखे एक ही रहे हों। इस तरह उनके बीच दोस्ती हो गई।

भेड़िये ने कुत्ते से कहा, "अजीब बात है। हम दोनों एक ही खानदान के हैं। लेकिन तुम इतने तगड़े हो और मैं इतना दुबला-पतला?"

कुत्ता बोला, "मेरा मालिक मुझे हर रोज़ बढ़िया खाना देता है।"

भेड़िया बोला, "और मुझे कई-कई दिन तक खाना नहीं मिलता। इस जंगल में शिकार के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है।"

कुत्ते ने कहा, "तुम कुछ दिन मेरे मेहमान बनकर रहो। मेरा मालिक तुम्हें भी बढ़िया खाना देगा। कुछ दिन बाद तुम भी तगड़े हो जाओगे।" भेड़िये ने कुत्ते की बात मान ली।

एक दिन भेड़िया टहलते-टहलते शहर जा पहुँचा। किसी तरह लोगों की नज़रों से बचकर अपने दोस्त के पास पहुँच गया। कुत्ते ने उसका खूब स्वागत किया। उसे बढ़िया खाना खिलाया, इधर-उधर घुमाया और फिर अपनी कोठरी में ले गया।

कोठरी को देखकर भेड़िया बोला, "क्या तुम इस छोटी-सी कोठरी में रहते हो? यहाँ से तो आसमान भी दिखाई नहीं देता, मैं एक दिन यहाँ रहूँ तो मर जाऊँ।"

कुत्ता बोला, "शहरों में जगह कम होती है न। सबको छोटी-छोटी कोठरियों में ही रहना पड़ता है।"

भेड़िया मान गया। थोड़ी देर बाद उसकी नज़र पास में पड़ी लोहे की एक साँकल पर गई। उसने पूछा, "यह क्या है? कुत्ता बोला, "यह साँकल है। मालिक कभी-कभी मुझे इससे बाँधकर रखते हैं।" भेड़िया उठकर चलने लगा। कुत्ते ने पूछा, "क्या हुआ?"

भेड़िये ने एक बार मुड़कर साँकल को देखा और कहा, "भाई यह बढ़िया खाना तुम्हें मुबारक। गले में साँकल मुझे बिल्कुल अच्छी नहीं लगती। मैं भूखा रह लूँगा लेकिन यह बंधन कभी सहन नहीं करूँगा।"

कुत्ते ने भेड़िये को समझाने की कोशिश की लेकिन भेड़िया अपने रास्ते चल दिया।

यह कहानी एकलव्य द्वारा विकसित प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम की कार्य-पुस्तिका "खुशी-खुशी" से साभार ली गई है।

चित्र ● विवेक वर्मा

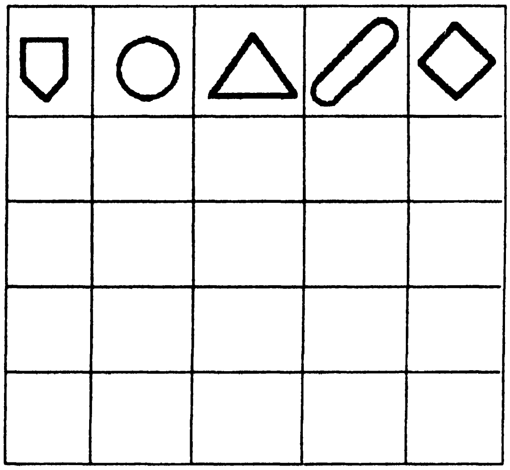

1

पच्चीस खाने हैं इस चौकोन में! पहले पाँच खानों में पाँच आकृतियाँ भरी हैं। इन्हीं पाँच आकृतियों को बाकी के खानों में भी भरना है। बस इतना ख्याल रखना कि चौकोन पूरा भर जाने पर, आड़े से देखें चाहे खड़े से, एक आकृति एक बार ही आए। यानी एक आड़ी और खड़ी लाइन में कोई भी आकृति दुबारा न आए, बस!

2

इन दो तस्वीरों में कम से कम दस फर्क हैं।
क्या तुम बता सकते हो वे कौन-कौन से हैं?

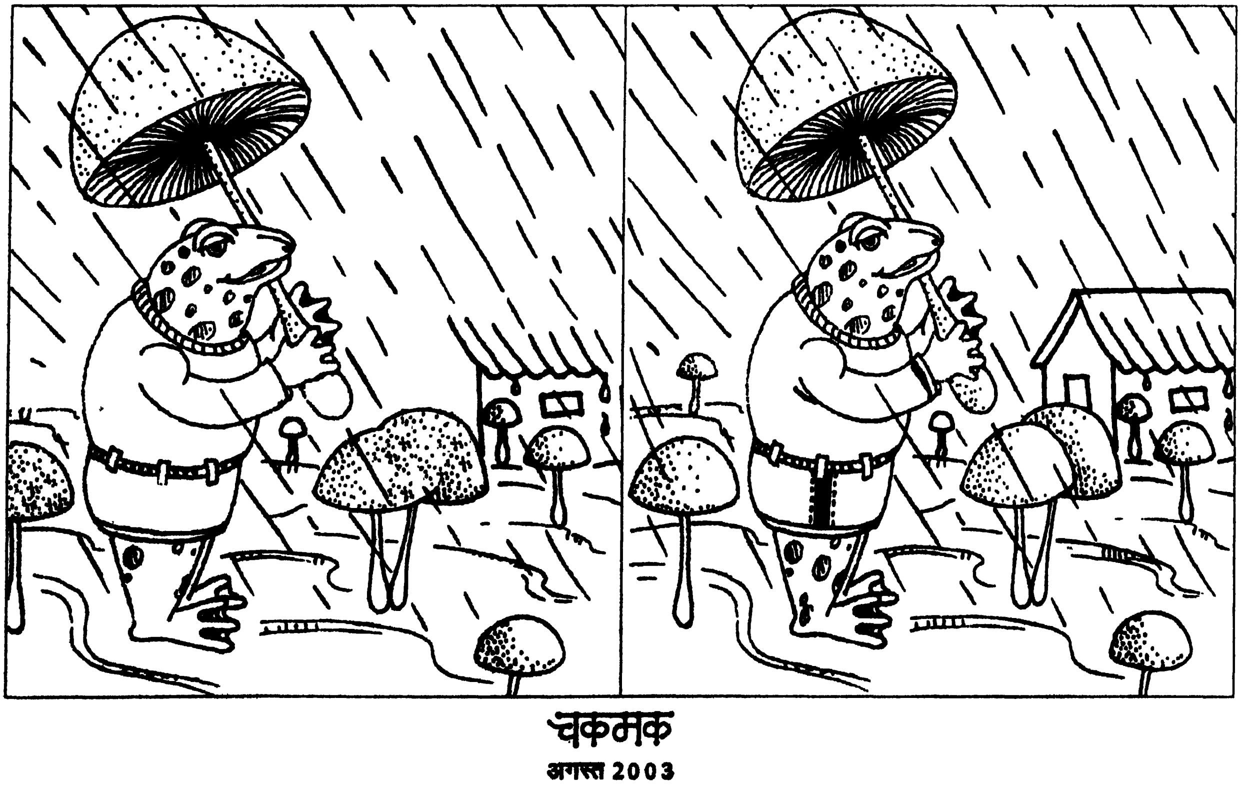

3

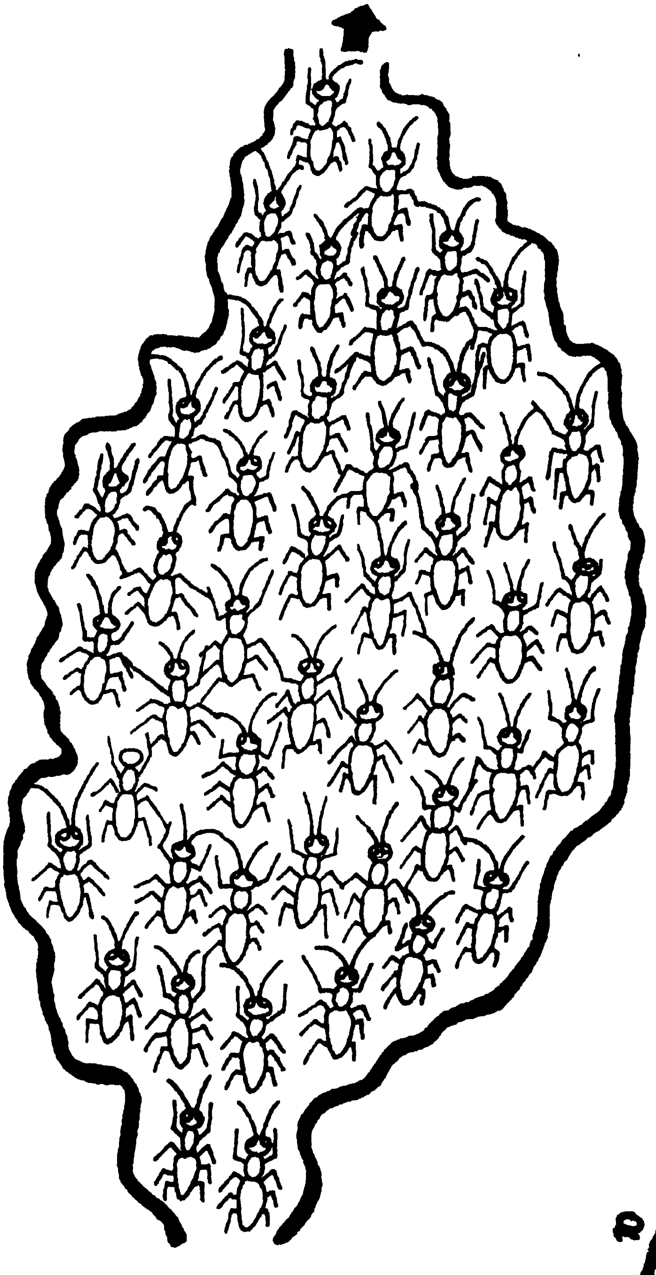

कहाँ चली जा रही हैं ये चींटियाँ? ये तो सबसे आगे वाली चींटी से ही पूछना पड़ेगा। ऐसे देखने से लगता है कि चींटियाँ एक दूसरे से सटकर चल रही हैं। पर एक रास्ता है जो सीधे आगे वाली चींटी तक पहुँचता है। ज़रा ढूँढो तो?

4

इस आकृति को देखो! यह एक वर्ग और उसके आधे हिस्से से मिलकर बनी है। हमें इस आकृति को चार बराबर हिस्सों में बाँटना है। क्या तुम ऐसा कर सकते हो?

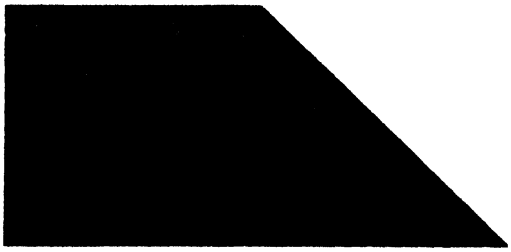

5

नीचे बने इस पहिए में पाँच तानें हैं। हर तान के आजू-बाजू एक-एक अंक लिखा है। तुम्हें इन अंकों में कुछ उठापटक करनी है। इन्हें ऐसे जमाना है कि हर तान के दो अंकों का जोड़ बराबर रहे।

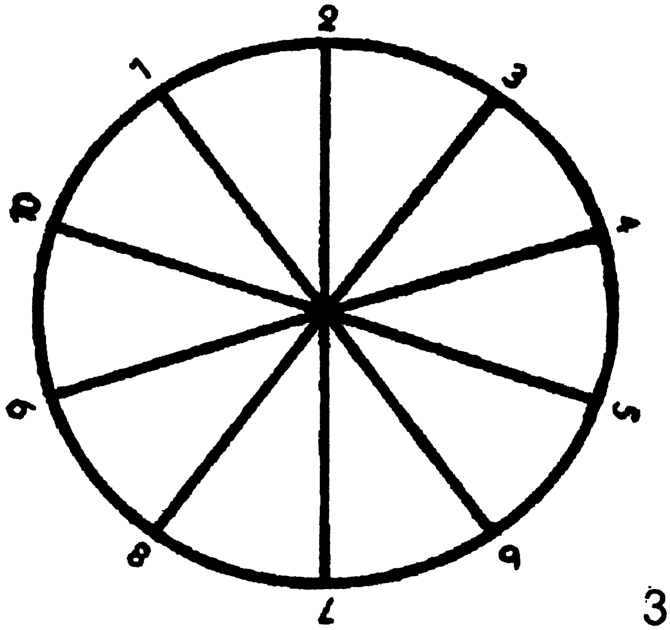

मेरी दादी

मेरी दादी आती हैं
चश्मा बड़ा लगाती हैं
चीज़ें ढूँढ न पाती हैं
तब हमसे मँगवाती हैं
लाठी लेकर जाती हैं
लेकिन नहीं डराती हैं
हँसती और हँसाती हैं
हमसे गीत गवाती हैं

● राष्ट्रबन्धु
चित्र ● मनोज कुलकर्णी

चकमक समाचार

बच्चों के गतिविधि शिविर आयोजित

पिछले माह मध्यप्रदेश के देवास ज़िले के सतवास और हरणगाँव में बच्चों के गतिविधि शिविर हुए। ये शिविर चकमक क्लब और सृजन नेटवर्क का साझा कार्यक्रम था। चकमक क्लब बच्चों को एक मंच पर लाने और उनमें बातचीत को बढ़ावा देने के साथ उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति को उभारने की एक कोशिश है।

सतवास में पाँच दिन और हरणगाँव में तीन दिनों तक चले इन शिविरों में बच्चों ने ढेरों गतिविधियाँ कीं। दस से सत्रह साल के तकरीबन ढाई सौ बच्चों ने इनमें भाग लिया। विज्ञान के प्रयोग, ऑरीगेमी उर्फ कागज़ के खेल, कविता-कहानी लेखन, चित्रकला, जादुई करतबों के अलावा मोनो एक्टिंग, कबड्डी और खो-खो जैसे मज़ेदार खेल भी खेले गए।

पूरे दिन की गतिविधियों के बाद एक बाल अखबार भी शिविर में आए बच्चों ने निकाला। इसमें बीते दिन की गतिविधियों का लेखा-जोखा रहता था। आखिरी दिन बच्चों ने उन चीज़ों की प्रदर्शनी लगाई जो शिविर के दौरान उन्होंने गढ़ी थीं। इस दिन अभिभावक और शिक्षक भी आए और सबने बच्चों के सृजन की सराहना की।

रपट : योगेश मालवीय

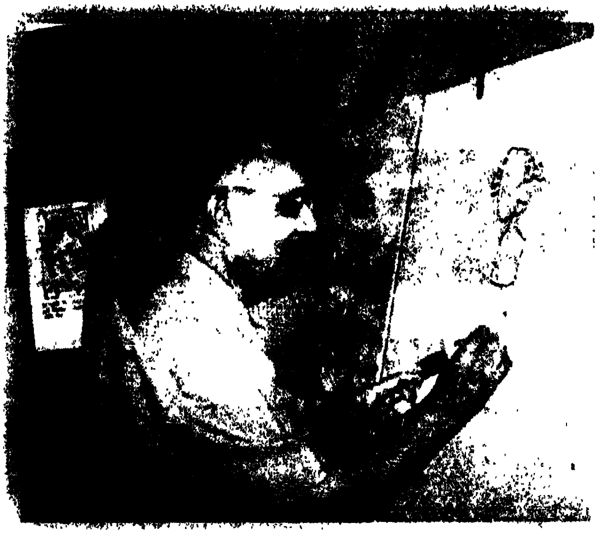

कार्टून प्रदर्शनी आयोजित

पिछले दिनों भोपाल में एक कार्टून प्रदर्शनी लगाई गई। प्रदर्शनी में हरिओम के बनाए चुनिन्दा कार्टून थे। इस मौके पर मशहूर कार्टूनिस्ट प्राण भी मौजूद थे। प्रदर्शनी में बड़ों और बच्चों की कार्टून प्रतियोगिताएँ भी हुईं।

बच्चों ने कार्टून विधा में जमकर हाथ दिखाए। हिना, इंदिरा तिवारी और अमन ने बेहतरीन कार्टून बनाए। हिना ने अपने कार्टून में एक बच्चे को दिखाया है जिस पर किताबें लदी हैं। लगभग सभी कार्टूनों में बच्चों ने अपने आसपास घट रही नाजायज़ चीज़ों पर चिन्ता जताई है।

प्रदर्शनी का तीसरा दिन पेंटिग का रहा। पेंटिंग का विषय था....... वन्य जीवन! इस बार भी बच्चों ने ज़ोरदार चित्र बनाए। इस अवसर पर तय किया गया कि बच्चों के लिए भी इसी तरह की प्रदर्शनियाँ आयोजित की जाएँगीं। (इसी प्रतियोगिता के कुछ कार्टून तुम आवरण पेजों पर देख सकते हो।)

रपट : राजु कुमार

शिविर सम्पन्न

खेल खेल में सीखना कितना आसान और मनोरंजक होता है ! यह बात एक बार फिर साबित हुई। ...मौका था विधा भवन बुनियादी शाला, उदयपुर, राजस्थान द्वारा आयोजित शिविर का!

इस शिविर में शिक्षक, कार्यकर्ता और बच्चों को मिलाकर कुल 43 लोगों ने भाग लिया। इस शिविर में फलों से तरह-तरह की स्वादिष्ट चीज़ें बनाना, मशीन से सिलाई, घरेलू उपकरणों की मरम्मत, लकड़ी से उपयोगी सामान और सीमेण्ट से विभिन्न चीज़ें मसलन गमले, रोशनदान आदि बनाना भी सिखाया।

एक माह तक चले इस अनूठे शिविर में बच्चों और बड़ों ने ढेर सारी चीज़ें सीखीं। इस शिविर में मध्यप्रदेश के झाबुआ ज़िले में ग्रामीण विकास का काम कर रही एक संस्था 'सम्पर्क' के कई बच्चों ने भी भाग लिया।

रपट : सन्तकुमार मेहता

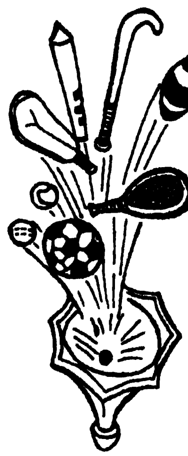

खेल समाचार

फुटबाल

अरसे बाद हमारी फुटबॉल पटरी पर आती लगी। 1962 यानी पूरे 41 साल बाद हम एशियाई चैम्पियन हुए हैं। यह करिश्मा कोलकाता के ईस्ट बंगाल क्लब ने कर दिखाया। थाइलैण्ड से फायनल में जीत पाने की उम्मीद कहाँ थी! पर हम जीत गए। वो भी एक के मुकाबले तीन गोल से। बाइचुंग भूटिया पूरे टूर्नामेण्ट में छाए रहे। उन्हें गोल्डन बूट मिला। हो सकता है अगले विश्वकप में हमें अपनी इसी टीम के लिए तालियाँ बजाने का मौका मिल जाए।

क्रिकेट

क्रिकेट में इन दिनों बांग्लादेश और चैम्पियन ऑस्ट्रेलिया के मुकाबले चल रहे हैं। हालाँकि बांग्लादेश का हारना तो तय ही है...। फिर भी उनके बल्लेबाज़ों ने प्रतिरोध तो दिखाया। ऑस्ट्रेलियाई चौकड़ी के आगे तीन सौ के आसपास पहुँचना बांग्लादेशी क्रिकेट के लिए अच्छा है। उधर इंग्लैण्ड और दक्षिण अफ्रीका के टेस्ट मुकाबले भी चल रहे हैं। उधर ग्रिम स्मिथ का बल्ला चमक रहा है। इंग्लैण्ड के प्रदर्शन से दुखी नासिर हुसैन ने कप्तानी माइकल वॉन को थमा दी है।

तीरंदाज़ी

इन दिनों हॉकी, फुटबॉल, टेनिस, वॉलीबॉल के अलावा एक और खेल में हमने अच्छा प्रदर्शन किया है। वो है तीरंदाज़ी! 42वीं आउटडोर टार्गेट तीरंदाज़ी प्रतियोगिता में हमारे तीरंदाज़ों ने कई दिनों बाद ढंग का प्रदर्शन किया। महिला टीम ने छठवाँ और पुरूषों की टीम ने चौथा स्थान पाया।

चित्र पहेली

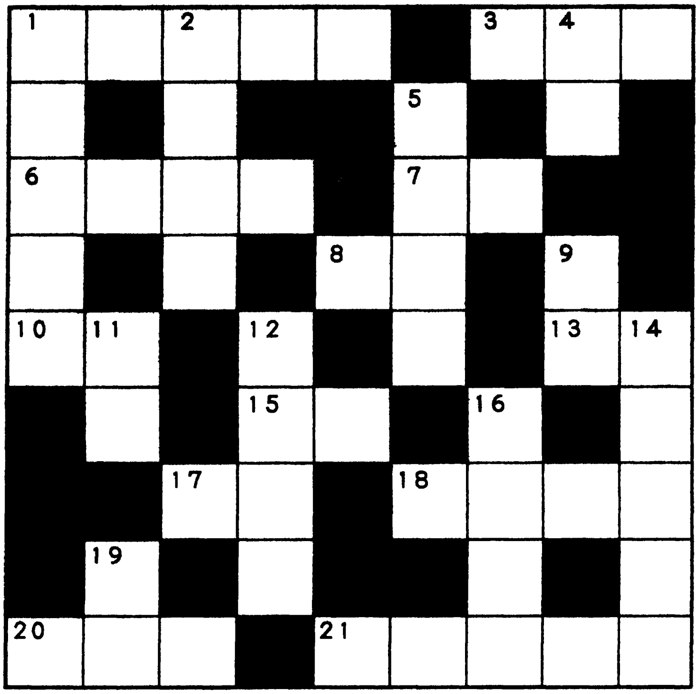

6.

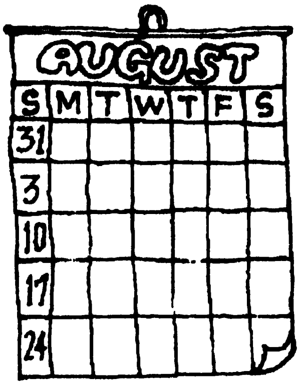

7.

संकेत : बाएँ से दाएँ

8.

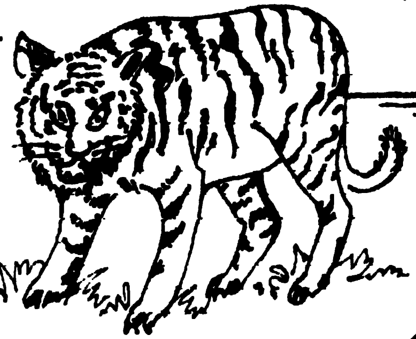

1.

10.

13.

3.

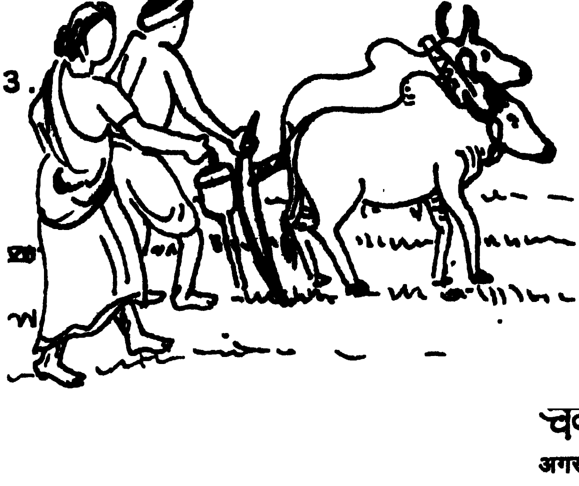

15.

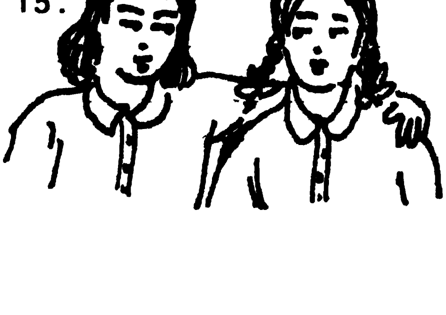

17. 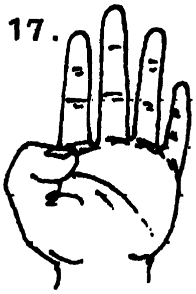

18. 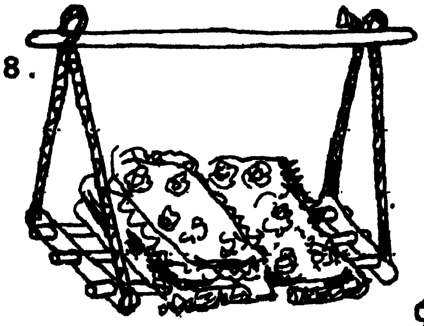

20. 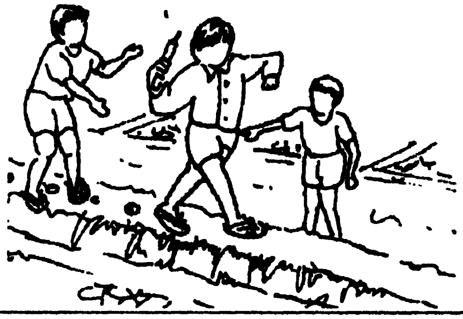

21.

संकेत : ऊपर से नीचे

1.

2. 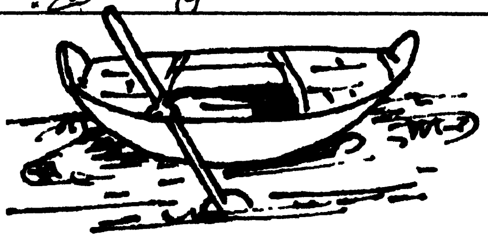

4.

5. 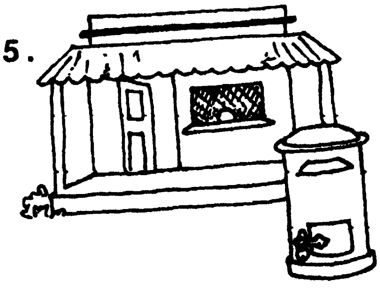

9.

11. 1,00,000

12. 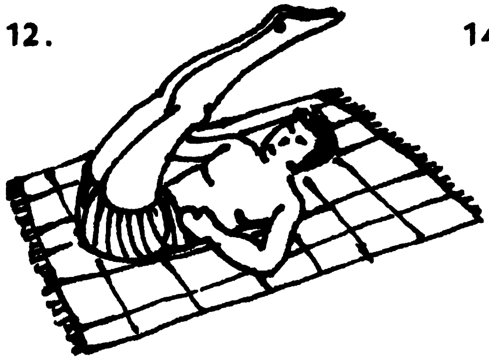

14. 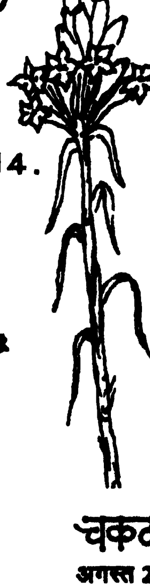

16. 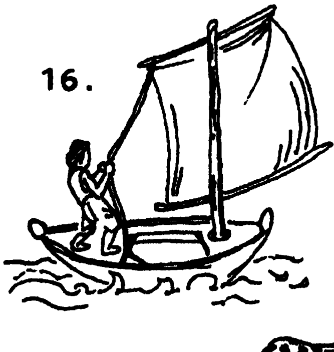

19. 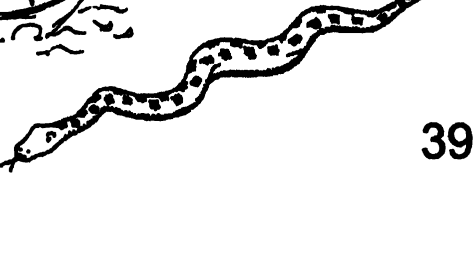

कलाकारी, मूँगफली से . . .

आप सोच रहे होंगे कि मूँगफली तो ट्रेन, बस, सिनेमाघर और चौपाटी पर टाइम पास कराने वाली चीज़ है! भला कलाकारी में इसका क्या काम? लेकिन जनाब, चीज़ों को अलग-अलग नज़र से देखने पर खूब सारी बातें सामने आती हैं। जैसे मूँगफली को ही ले लो! एक दो तीन चार तो क्या पाँच-पाँच दानों तक की मूँगफलियाँ भी देखने को मिल सकती हैं। साथ ही कुछ सीधी और कुछ टेढ़ी-मेढ़ी भी! मूँगफलियों में कमाल की आकृतियाँ छिपी रहती हैं। बस उन्हें ज़रा ध्यान से देखने की ज़रूरत है। हम इन मूँगफलियों से शेर, उल्लू, मुर्गी, चूज़े, बत्तख, चिड़ियाँ, हिरण, खरगोश, इंसान...... क्या क्या नहीं बना सकते हैं।

इन्हें कैसे बनाएँ? बस जब भी तुम मूँगफली खाओ तो उन्हें गौर से देखो। और ऐसी खास मूँगफलियाँ सहेज लो जिनमें तुम्हें कोई आकृति झाँकती दिखाई दे रही हो। हाँ, इसके लिए तुम्हें इन्हें बार-बार उलट-पुलटकर देखना पड़ेगा। एक हल्का-सा आभास होने पर स्पष्ट आकृति खोजी जा सकती है।

मान लो तुम्हें यह मूँगफली मिली.........। इससे क्या बन सकता है?

इससे एक सुन्दर चूज़ा तो बना ही सकता है।
इसके लिए पहले इसे सूखे कपड़े से अच्छी तरह साफ कर लो।

इसका छोटा वाला हिस्सा सिर हो जाएगा। बस इसमें एक काँटे का नुकीला हिस्सा तोड़कर चोंच लगा दो। चोंच लगाने के लिए पहले सुई जैसी नुकीली चीज़ से मूँगफली में छेद कर लेना। चोंच के लिए माचिस की तीली को भी नुकीला करके इस्तेमाल कर सकते हैं।

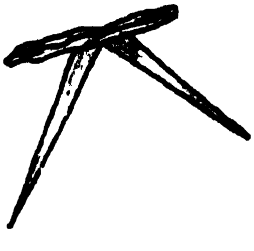

इसी तरह दो पैर भी बनाना हैं। इसके लिए भी या तो काँटे या फिर माचिस की तीली का उपयोग कर सकते हो। पैरों को चिपकाने के लिए फेवीकॉल जैसी चीज़ें भी इस्तेमाल कर सकते हो।

अब चूज़े की आँख बनानी हैं। इसके लिए एक आसान तरीका तो यह है कि सिर में आँख वाली जगह पर कुरेदकर गड्ढेनुमा आकृति बना दो। या फिर किसी रंग से आँखें उकेर भी सकते हो।

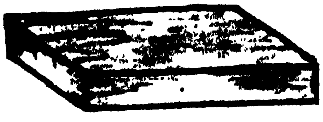

अब रहा सजाने का काम तो इसमें तो तुम माहिर हो ही! इस चूज़े को तुम लकड़ी के टुकड़े या पटिए पर चिपका दो।

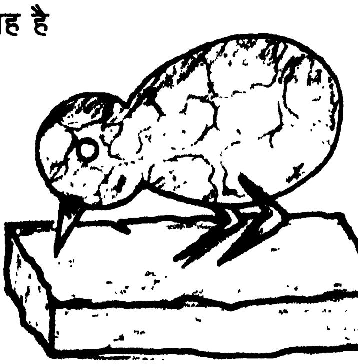

हमें यकीन है तुम ऐसी सैकड़ों आकृतियाँ मूँगफलियों में तलाश लोगे। कुछ नमूने अगले पेज पर भी दिए हैं।

प्रस्तुति : प्रेम कुमार 'मनमौजी'
चित्र : कैलाश दुबे

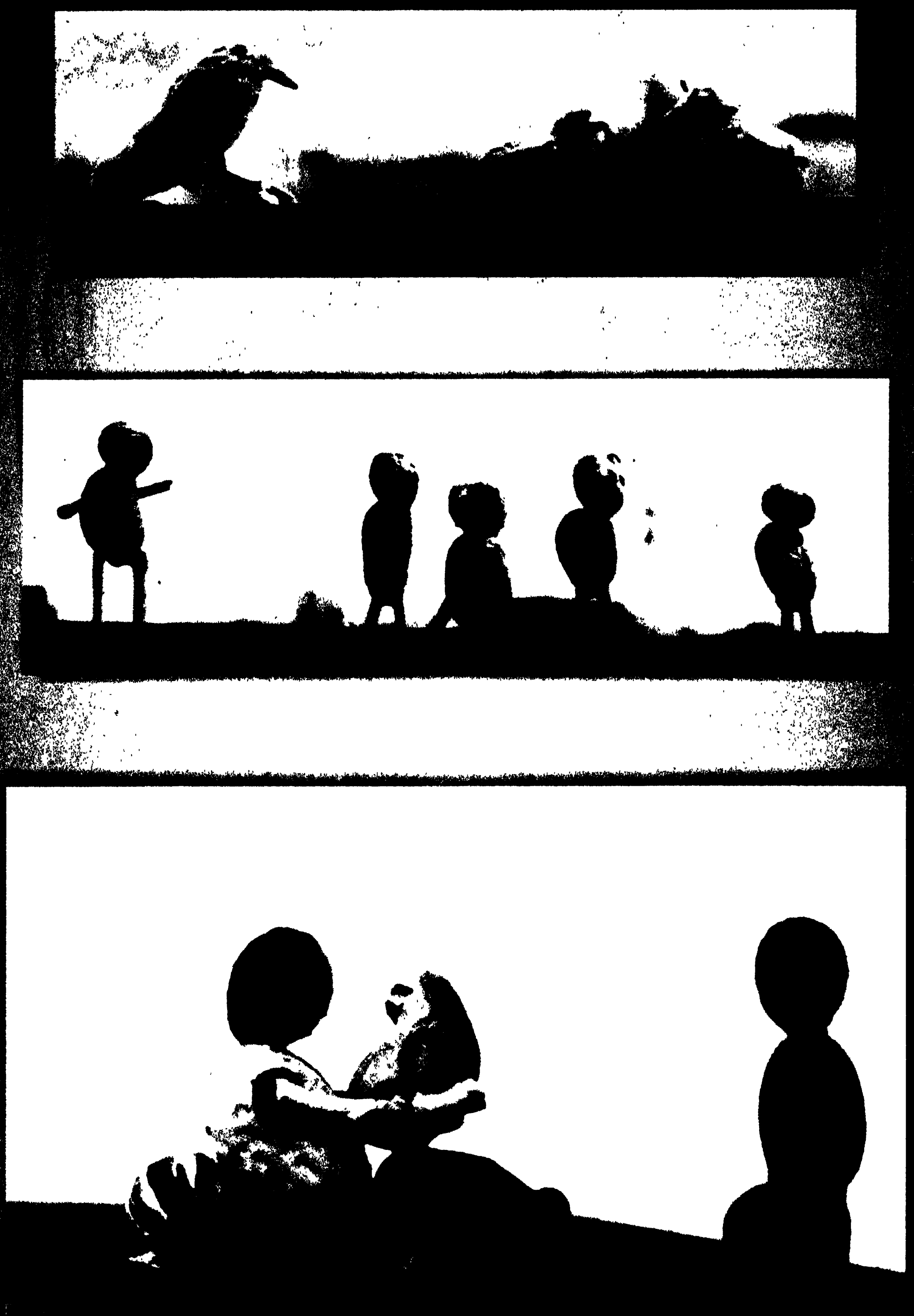

सभी मॉडल : प्रेम मनमौजी

फोटो : के.आर. शर्मा

25H6